Fortnightly per copy Rs. 12/-
ओ३म्
03rd October 2024

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Website : http://www.aryasabhaapts.org
Narendra Bhavan Phone No. : 040 24760030
Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

27 सितम्बर 2024 के दिन भगतसिंह की जन्म जयन्ती के अवसर पर लाहौर काण्ड और साण्डर्स हत्याकाण्ड के शहीद

क्रान्तिकारी शिरोमणि और क्रान्ति-लेखक

शहीद सरदार भगतसिंह

लाहौर काण्ड और साण्डर्स हत्याकाण्ड के शहीद

शहीद सरदार भगतसिंह

Born 27 September 1907
Banga, Punjab, British India
(present-day Punjab, Pakistan)
Died 23 March 1931 (aged 23)
He born in Arya Samaj Family
His grandfather, father and uncle were Arya Samaj members. He was a student of DAV School.

Lahore Central Jail,
Punjab, British India
(present-day Punjab, Pakistan)
Cause of death Execution by hanging
Monuments: Hussainiwala National Martyrs Memorial
Other names
Shaheed-e-Azam
Organization(s)
Naujawan Bharat Sabha
Hindustan Socialist Republican Association

Movement: Indian independence movement
Criminal charges :
Murder of John P. Saunders and Channan Singh
Criminal penalty : Death
Criminal status Executed on 23 March 1931

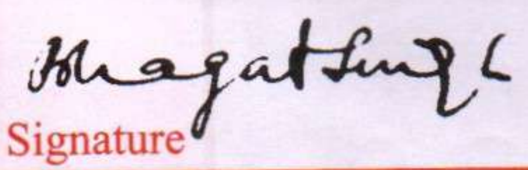
Signature

SHAHEED BHAGAT SINGH

Bhagat Singh (27 September 1907 – 23 March 1931 was an Indian anti-colonial revolutionary, who participated in the mistaken murder of a junior British police officer in December 1928 in what was to be retaliation for the death of an Indian nationalist. He later took part in a largely symbolic bombing of the Central Legislative Assembly in Delhi and a hunger strike in jail, which—on the back of sympathetic coverage in Indian-owned newspapers—turned him into a household name in the Punjab region, and after his execution at age 23 into a martyr and folk hero in Northern India. Borrowing ideas from Bolshevism and anarchism, the charismatic Singh electrified a growing militancy in India in the 1930s, and prompted urgent introspection within the Indian National Congress's nonviolent but eventually successful campaign for India's independence.[

In December 1928, Bhagat Singh and an associate, Shivaram Rajguru, both members of a small revolutionary group, the Hindustan Socialist Republican Association (also Army, or HSRA), shot dead a 21-year-old British police officer, John Saunders, in Lahore, Punjab, in what is today Pakistan, mistaking Saunders, who was still on probation, for the British senior police superintendent, James Scott, whom they had intended to assassinate.They held Scott responsible for the death of a popular Indian nationalist leader Lala Lajpat Rai for having ordered a lathi (baton) charge in which Rai was injured and two weeks thereafter died of a heart attack. As Saunders exited a police station on a motorcycle, he was felled by a single bullet fired from across the street by Rajguru, a marksman. As he lay injured, he was shot

लाहौर काण्ड और साण्डर्स हत्याकाण्ड के शहीद

क्रान्तिकारी शिरोमणि और क्रान्ति-लेखक
शहीद सरदार भगतसिंह

-आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक

सरदार भगतसिंह उन क्रान्तिकारियों में से एक हैं जिनका नाम और काम व्यापक स्तर पर प्रसिद्ध हुआ । इसके कारण थे-सरदार भगतसिंह की क्रान्तिकारी पारिवारिक पृष्ठभूमि का होना, क्रान्तिकारी लेखक होना और उत्साही क्रान्तिकारी होना ।

भगतसिंह ने जब से होश सम्भाला, उन्हें अपने परिवार में आर्य समाजी संस्कार, देशभक्ति और क्रान्तिकारी-वातावरण मिला। भगतसिंह का जन्म जिला-लायलपुर के 'बंगा' नामक गांव में हुआ था । उनके दादा जी का नाम सरदार अर्जुनसिंह था । सरदार अर्जुनसिंह सिख परिवार के होते हुए भी संस्कारों से दृढ़ आर्य समाजी थी । वे जहां भी जाते, अपने साथ एक पोटली रखते थे जिसमें यज्ञकुण्ड और यज्ञ सम्बन्धी सामान रहता था । वे प्रतिदिन यज्ञ करते थे । वे पूरी निष्ठा और गम्भीरता से महर्षि दयानन्द रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' का स्वाध्याय किया करते थे । सत्यार्थ प्रकाश के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी । उस ग्रन्थ से उन्होंने स्वराज्य प्रेम की प्रेरणा ली थी । यही स्वाराज्य ावना उनके तीनों पुत्रों श्री किशनसिंह, श्री अजीतसिंह और श्री स्वर्णसिंह में कूट-कूट कर भरी गई थी । स्वराज्य के लिए तीनों पुत्रों ने कारावास भोगा, जेल की यातनाएं सहीं । स्वर्णसिंह तो जेल को यातनाओं से जर्जर शरीर के कारण युवावस्था में ही वीरगति को प्राप्त हो गए थे । भगतसिंह के पिता श्री किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह को मांडले (बर्मा) की जेल में बन्द किया हुआ था । ये जब छूटकर आए उसी दिन भगतसिंह का जन्म हुआ था ।

भगतसिंह के दादा अर्जुनसिंह एक बार अपने गांव से ६० मील दूर किसी विवाह में शामिल होने के लिए गए । विवाह के अवसर पर सिख पुरोहित महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश के उदाहरण दे-दे कर उसकी कटु आलोचना कर रहा था । अर्जुनसिंह ने देखा कि वह व्यक्ति झूठे उदाहरण सुना-सुना कर लोगों को भड़का रहा था । अर्जुन सिंह ने उसको टोकते हुए कहा कि 'आप लोगों को मिथ्या और कल्पित में नहीं है । आप सत्यार्थ प्रकाश को व्यर्थ बदनाम न करें, उसने कहा कि 'सत्यार्थ प्रकाश लाओ, मैं सारे उद्धरण दिखा दूंगा ।' उस समय कहीं-कहीं कोई-कोई पुस्तक मिलती थी । पुरोहित ने सोचा था कि तेरी बात ऊपर रह जाएगी । यहां किसके पास सत्यार्थ प्रकास मिलेगा ?

सत्यार्थ प्रकाश के प्रति श्रद्धा रखने वाले श्री अर्जुनसिंह रात में ही ६० मील पैदल चलकर घर आए और सत्यार्थ प्रकाश लेकर सबेरे तक पैदल ही वापस विवाह स्थल पर पहुंच गए । जब पुरोहित को सत्यार्थ प्रकाश हाथ में थमा कर उद्धरण दिखाने के लिए कहा तो वह बगलें झांकने लगा । आखिर पुरोहित ने अपनी गलती के लिए माफी मांगकर पीछा छुड़ाया । इसी प्रकार भगतसिंह की दादी भी एक र्मिक महलिा थीं । यही संस्कार एवं परम्पराएँ भगतसिंह तक आयीं। तीन वर्ष की अवस्था में अपने गायत्री मन्त्र स्मरण कर लिया था । भगतसिंह का यज्ञोपवीत कराया था । शिक्षा प्राप्त करने के लिए आपके पिता जी ने आपको डी.ए.वी. स्कूल लाहौर में प्रवेश दिलाया । अन्तिम वर्षों में आपकी विचारधारा क्रान्तिकारी के साथ-साथ साम्यवादी हो गई थी । देशहित और समाजहित के लिए आपने अपना जीवन लगा दिया । शेष जीवन-परिचय क्रान्तिकारी श्री मन्मथनाथ गुप्त के शब्दों में प्रस्तुत है । (सम्पादक)

''सरदार भगतसिंह के विषय में लिखते हुए जो सब से पहली बात सामने आती है, वह यह कि उनके खानदान में देशभक्ति कोई अपरिचित वस्तु नहीं थी । उनके पिता सरदार किशनसिंह बड़े धीर, स्थिर और ज्ञानी व्यक्ति थे, फिर भी उन्हें पुलिस से बचने के लिए नेपाल जाना पड़ा था । उनके चाचा सरदार अजीतसिंह को क्रान्तिकारी आन्दोलन के सिलसिले में बहुत दिनों तक नजरबन्द किया जा चुका था । इसी प्रकार उनके एक अन्य चाचा सुवर्णसिंह भी किसी न किसी प्रकार से क्रान्तिारी आन्दोलन से सम्बद्ध थे । जिस दिन सरदार भगतसिंह पैदा हुए, उसी दिन उनके चाचा अजीतसिंह और सुवर्णसिंह जेल से छूटे । इसी से खुश होकर उनकी दादी ने उनको भागों वाला या भाग्यवान् कहा और उनका नाम भगतसिंह पड़ा ।

सरदार भगतसिंह ने डी.ए.वी. स्कूल से मैट्रीकुलेशन पास किया । उसके बाद वे नेशनल कॉलेज में पढ़ने लगे, जहां उनका परिचय सुखदेव भगवतीचरण, यशपाल आदि से हुआ जो बाद में चलकर

बहुत प्रमुख क्रान्तिकारी हुए । इस कॉलेज में जयचन्द्र विद्यालंकार नाम के एक अध्यापक थे जो बहुत पहले शचीन्द्रनाथ सान्याल के प्रभाव में आ चुके थे । जयचन्द्र जी ने शचीन्द्रनाथ सान्याल के 'बन्दी जीवन' के दूसरे भाग का अनुवाद भी किया था, जो बहुत कम लोगों को मालूम है । जयचन्द्र हिन्दू विचारों के थे, पर क्रान्ति का प्रचार करते थे । कुछ भी हो, इन्हीं के जरिए से भगतसिंह और उनकी मित्र मण्डली का प्रवेश क्रान्तिकारी दल में हो गया । गुरु गुड़ ही रह गए और चेले चीनी हो गए । जयचन्द्र का एक प्रभाव फिर भी इन लोगों पर यह रह गया कि सब के सब विद्याप्रेमी हुए । यद्यपि भगतसिंह परिवार में पैदा हुए थे, पर उन्होंने हिन्दी भी सीख ली और हिन्दी में लिखने लगे ।

जब भगतसिंह ने एफ.ए. पास कर लिया, तब घर वाले जो दूध के जले थे और फूंक फूंककर छाछ पीते थे, वह चाहने लगे कि भगतसिंह की शादी हो जाए । भगतसिंह ने समझा कि यह यों ही बात है, जैसे हुआ करती है टल जाएगी । इसलिए उन्होंने टालना शुरू किया, पर जब देखा कि बात टलने वाली नहीं है और घर वाले शादी करने पर उतारू हैं तो उन्होंने समझा कि शादी करके एक नवयुवती का जीवन नष्ट करने के बजाय घर से भाग चलना ही अच्छा है । तदनुसार वे वहां से भागे और भाग कर दिल्ली पहुंचे और 'अर्जुन' पत्र में काम करने लगे ।

इसके बाद वे कानपुर गए, क्योंकि दिल्ली का पता घरवालों को मालूम हो चुका था । कानपुर में उन्होंने गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा प्रवर्तित्त और सम्पादित 'प्रताप' में कुछ काम करना शुरू किया और वहां वे अपना परिचय बलवन्तसिंह देने लगे । यही उनके दल का नाम भी बन गया ।

जो कुछ भी हो, जब सरदार भगतसिंह कानपुर में थे, तब फिर एक बार घर वालों को पता लग गया कि वे कानपुर में हैं । यह खबर एक मित्र के जरिए से लगी थी । तब मित्र को सन्देश आया कि भागतसिंह की माँ हुत बीमार है और उसे कहो कि वह जल्दी घर चला आए । भगतसिंह को अपनी माँ से बहुत प्यार था । वे फौरन घर चले गए । वहां फिर उन से शादी की बात नहीं कही गई । वहां उन दिनों सारे पंजाब में गुरु का बाग वाला आन्दोलन चल रहा था, जिसका उद्देश्य बहुत ही उचित था । वह यह था कि सिख महन्तों ने जो बड़ी-बड़ी जायदादों पर कब्जा कर रखा है, वे उनसे ले ली जाएं और सिख समाज को सौंपी जाएं । कहना न होगा कि यह आन्दोलन भगतसिंह को बहुत पसन्द आया और उन्होंने उन लोगों की बड़ी सेवा की जो उनके गाँव बंगा से होकर सत्याग्रह करने के लिए जत्थे ले जा रहे थे । ये जत्थे शहीदी जत्थे कहलाते थे । भगतसिंह ने इस आन्दोलन में भाग लेने वालों को पूरी मदद दी, पर वे स्वयं किसी जत्थे में शरीक नहीं हुए, क्योंकि वे जिस शहीदी जत्थे में शरीक हुए थे, उस जत्थे के पांव में बाकी सब जत्थे के पांव आ जाते थे । भगतिसिंह ने उस आन्दोलन में भाग लेने वालों को पूरी मदद दी, पर वे स्वयं किसी जत्थे में शरीक नहीं हुए, क्योंकि वे जिस शहीदी जत्थे में शरीक हुए थे, उस जत्थे के पांव में बाकी सब जत्थे के पांव आ जाते थे । क्रान्तिकारी आन्दोलन का उद्देश्य सब तरह से महन्तों और महन्ती का अन्त करके जनता के हाथ में राष्ट्र और सारे उत्पादन के साधन सौंपना था । अफसोस है कि भारत स्वतन्त्र हुए इतने दिन हो गए, पर हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई महन्तों का खात्मा नहीं हुआ और वे धर्म के नाम पर साधारण जनता को उल्लू बनाकर खूब गुलछर्रे उड़ा रहे हैं । धर्म निरपेक्ष राष्ट्र का यह अर्थ नहीं ।

इन्हीं दिनों की बात है कि बंगाल में गोपीमोहन शाहा एक अंग्रेज को मारकर शहीद हो गए । गाँधी जी ने इस पर गोपीमोहन शाहा की बड़ी निन्दा की, पर बंगाल के नेता देशबन्धु चित्तरंजन दास ने न केवल गोपीमोहन की प्रशंसा की, बल्कि सिरगंज प्रान्तीय सम्मेलन में गोपीमोहन की प्रशंसा के लिए एक प्रस्ताव पास कराया । गाँधी और दास में इस बार र्सजनिक रूप से बहुत लम्बा तर्क-वितर्क हुआ । सरदार भगतिसिंह के कानों तक भी इसकी खबर पहुंची । उन्होंने लायलपुर में इस सम्बन्ध में एक भाषण किया । जिसमें क्रान्तिकारी पक्ष का जोरदार समर्थन किया और कहा कि प्रत्येक गुलाम जाति को अधिकार है कि व जिस भी प्रकार चाहे और जिस भी प्रकार सम्भव हो अपनी गुलामी की जन्जीर को तोड़ डाले । इस पर पुलिस ने भगतसिंह पर राजद्रोह का मुकदमा चलाना चाहा, पर मुकदमा चल नहीं सका और भगतसिंह के नेतृत्व में और भी नवजवान आ गए ।

काकोरी षड्यन्त्र के जमाने में ही गतसिंह पंजाब के क्रान्तिकारी नेता के रूप में मान लिए गए थे और काकोरी षड्यन्त्र में पेश किए गए गुप्त कागजात में लाहौर के उपदेशक नाम से जिस व्यक्ति का उल्लेख आया करता था, वे भगतसिंह ही थे । यद्यपि पुलिस को उस समय इसका पता नहीं था । भगतसिंह एक बार काकोरी षड्यन्त्र के मुकदमे का तमाशा देखने लखनऊ भी आए थे । उस समय मुकदमा सैयद ऐनुद्दीन की निम्न अदालन में चल रहा था ।

जब तक काकोरी षड्यन्त्र चलता रहा तब तक क्रान्तिकारी दल के अन्दर का नरम पक्ष साथ ही गिरफ्तार लोगों के रिश्तेदार बाहर के क्रान्तिकारियों और

फरारों पर यह प्रभाव डालते रहे कि कोई ऐसा कार्य न किया जाए जिससे मुकदमे पर बुरा प्रभाव पड़े और सरकार बदला लेने के लिए तैयार हो जाए । भीतर-भीतर पुलिस के साथ एक समझौते की भी बातचीत चल रही थी, जिसका उद्देश्य यह था कि कुछ अभियुक्त एकदम छोड़ दिए जाएं किसी को फाँसी न ह इत्यादि इत्यादि । पर पुलिस ने अन्त तक समझौता करना स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उसे काफी प्राण मिल गए और रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाकउल्ला और रोशनसिंह को फाँसी की सजा दे दी गई । तब चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और काकोरी षड्यन्त्र के दण्डित राजकुमार सिंह के छोटे भाई विजयकुमारसिंह खुलकर आन्दोलन में तेजी लाने के लिए तैयार हो गए । तब अपने साथियों को फाँसी हो ही गई, तो फिर समझौता या रियायत का प्रश्न कहाँ उठता था । सब से पहले यह चेष्टा की गई कि जेल में पड़े क्रान्तिकारियों को जेल से निकाला जाए । पर इस कार्य में भी सफलता नहीं मिली । सफलता मिल तो सकती थी, पर उसके लिए बहुत दाम देने की जरूरत थी, जो उचित न होती । यदि एक व्यक्ति को जेल से छुड़ाने के लिए दस क्रान्तिकारी मारे जाते, तो यह उचित बात न होती ।

इसलिए यह कार्यक्रम भी छोड़ दिया गया । दल का नाम हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन था । शचीन्द्रनाथ सान्याल ने यह नाम रखा था । दल का उद्देश्य प्रजातन्त्र की स्थापना था । संविधान में यह बता दिया गया था कि दल ऐसे समाज की स्थापना करना चाहता है जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण असम्भव हो, साथ ही दल के एक पर्चे में जो गुप्त रूप से पेशावर से लेकर रंगून तक बांटा गया था, यह कहा गया था कि दल के सामने ऋषि-मुनियों के आदर्श के साथ ही रूस का आदर्श भी है । फिर भी स्पष्ट रूप से समाजवाद का नाम नहीं लिया गया था । अब चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, विजयकुमारसिंह, सुरेन्द्र पाण्डेय आदि ने यह जरूरी समझा कि दल का उद्देश्य स्पष्ट रूप से समाजवाद बता दिया जाए । तदनुसार दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोशिएशन यानी हिन्दुस्तान सामाजवादी प्रजातान्त्रिक संघ कर दिया गया । इसके उद्देश्य में और स्पष्ट कर दिया गया कि दल समाजवाद के लिए लड़ रहा है । यह स्मरण रहे कि उस समय तक कांग्रेस ने ध्येय के रूप में पूर्ण स्वतन्त्रता भी नहीं अपनायी थी, समाजवाद की बात तो दूर रही । काँग्रेस ने समाजवाद के ध्येय को स्वतन्त्रता के बाद लाने को अगाड़ी में अपनाया है । इससे यह स्पष्ट है कि विचारों के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी दल कांग्रेस से बहुत आगे रहा । कांग्रेस ने समाजवाद के ध्येय को कहां तक नारे के रूप में ही अपनाया है और कहां तक वास्तविक रूप में, अभी यह देखना है ।

दल की ओर से उत्तर भारत में कई जगह बम के कारखाने खोले गए । साथ ही नौजवान भारत सभाओं की भी स्थापना हुई । यदि क्रान्तिकारी दल पर सरकार का उस प्रकार से प्रहार न होता, जिस प्रकार कि आगे चलकर हुआ, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि नौजवान भारत सभा कांग्रेस से अधिक शक्तिशाली और जनप्रिय हो जाती ।

क्रान्तिकारी दल बराबर जनता को साथ लेकर चलने की चेष्टा करता रहा । इसका प्रमाण यह है कि जब १९२८ में सामिन कमीशन का ऐलान हुआ कि वह आकर भारत के भविष्य के ढांचे का निर्णय करे, तो कांग्रेस ने तो केवल बायकाट का ही नारा दिया, पर क्रान्तिकारी इससे आगे बढ़ गए और वे कमीशन के सदस्यों को ही मार डालना चहते थे । उस सम्बन्ध में एक प्रयत्न भी हुआ जिसमें मार्कण्डेय, हरेन्द्र भट्टाचार्य और मनमोहन ने भाग लिया, पर वह सफल नहीं हुआ ।

कांग्रेस के नेतृत्व में ब्रिटेन से भेजे हुए साइमन का बायकाट चालू रहा । जब कमीशन लाहौर में १० अक्तूबर १९२८ को पहुंचा तो उसका बायकाट करते समय एक भीड़ का नेतृत्व करते हुए लाला लाजपतराय पर लाठियां पड़ीं । चोटें बहुत अधिक थीं । लाला जी ने तबी बिस्तरा पकड़ लिया और १७ नवम्बर १९२८ को इस चोट के कारण उनका देहान्त हो गया । इस खबर से सारे देश में बहुत खलबली मच गई ।

क्रान्तिकारियों ने यह सोचा कि यदि इस राष्ट्रीय अपमान का दला न लिया गया, तो जनता को बहुत धक्का लगेगा और साइमन कमीशन के बायकाट से जो जोश उत्पन्न हुआ था, वह समाप्त हो जाएगा । तदनुसार यह निश्चय को मारा जाए । इसके लिए चार व्यक्ति नियुक्त हुए-

१) चन्द्रशेखर आज़ाद,
२) भगतसिं, ३) शिवराम राजगुरु और
४) जयगोपाल ।

जब साण्डर्स नामक पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट अपनी मोटर साइकल पर पुलिस के दफ्तर से निकल रहा था तो उस पर हमला हुआ । साण्डर्स वहीं गिर पड़ा और क्रान्तिकारी भाग गए । इस मौके पर विजयकुमार सिन्हा भी आसपास रिजर्व के रूप में मौजूद थे ।

साण्डर्स की हत्या से सारे भारत में खुशी की लहर दौड़ गई, क्योंकि लोगों के सामने यह स्पष्ट हो गया कि एक न्यायालय ऐसा है जहां बारतीयों के लिए भी न्याय हो सकता है । पर ब्रिटिश सरकार एकदम पागल हो गई और बड़ी कठिनाई से क्रान्तिकारी लाहौर से बाहर निकल पाए । चन्द्रशेखर आज़ाद को भागने

में ज्यादा दिक्कत नहीं हुई, पर भगतसिंह को कौशल से बाहर निकलना पड़ा। वे शहीद भगवती चरण की पत्नी दुर्गादेवी और उनके शिशु पुत्र की सहायता से बाहर निकल पाए।

इसके बाद भगतसिंह चाहते तो रूस आदि में भाग सकते थे, पर उन्होंने ऐसा उचित नहीं समझा। इस समय तक परिस्थिति ऐसी थी कि राष्ट्रीय यज्ञ जारी था और वह आहुति मांग रहा था। आहुतियाँ तो बहुत हो चुकी थीं, पर इस आहुति के साथ-साथ बहरों को सुनाने के लिए धड़ाके के साथ बीजमन्त्र देने की जरूरत थी। ऐसा मन्त्र जो कान में पड़कर शाखा-प्रशाखा फैलाकर नस-नस के रक्तकण में लालिमा के रूप में फैल जाए। यह बीज मन्त्र था इन्कलाब जिन्दाबाद और उसके साथ-साथ समाजवाद का ध्येय। जब बंकिमचन्द्र ने अपने उपन्यास 'आनन्द मठ' में 'वन्देमातरम्' शब्द का प्रयोग किया था तब उन्हें शायद पता न हो कि वह एक बीज मन्त्र के रूप में लगभग अर्द्धशताब्दी तक अपना कार्य करेगा और उसका कवच पहनकर कितने ही देशभक्त फाँसी पर लटक जाएंगे या काले पानी की कालकोठरियों में कुलबुलाते रहेंगे, फिर भी घुटना नहीं टेकेंगे। अब यह मन्त्र कुछ घिस पिर चुका था इतना कि अब सिक्के पर क्या लिखा है, पढ़ा नहीं जाता था। इस बीच गाधी ज आए, पर उन्होंने सत्य और अहिंसा का जो नारा दिया, वह जन-जन की गइराइयों में पैट नहीं सका था। एक विनोबा भावे के अतिरिक्त किसी ने इस नारे को सिवा एक राजनैतिक पेच के रूप में ग्रहण नहीं किया था।

जब भगतसिंह के सामने प्रश्न यह था कि यह नया बीच मन्त्र कैसे भारत को दिया जाए ताकि वह तब तक गूंजे और उसमें से लपटें और धुआं निकलता रहे जब तक कि सही अर्थों में समाजवाद की स्थापना न हो जाए। यह तय हुआ कि ऐसी नाटकीय स्थिति में इन्कलाब ज़िन्दाबाद का नारा बुलन्द किया जाए कि वह फौरन हजारों-लाखों के मन में आग छुआ दे। केवल नाटक या नाटकीयता से कुछ नहीं होने का था। इतिहास नाटकों से नहीं बदला करता उसके लिए रक्त की आवश्यकता होती है। भगतसिंह ने इसके लिए अपना रक्त देने का निश्चय किया। उनको बहुत समझाया गया कि तुम पर तो लाहौर वाली हत्या का मुकद्दमा है, पर वे नहीं माने और कानपुर के बटुकेश्वर दत्त को साथ लेकर उन्होंने १९२९ की ८ अप्रैल को दिल्ली में असेम्बली भवन में बम डाला। बम मारने का उद्देश्य किसी को मारना नहीं था, बल्कि जैसा कि उस समय के बांटे गए पर्चे में बताया गया था उद्देश्य था 'बहरों को सुनाना।' इस पर्चे में यह स्पष्ट रूप से लिखा था कि भारतीय क्रान्तिकारी दल का उद्देश्य समाजवाद की स्थापना है और हमारा नारा है 'इन्कलाब जिन्द=ाबाद।'

उसी दिन से सारे भारत में इन दो युवकों का नाम प्रसिद्ध हो गया। एक नेता ने इनके विरुद्ध एक बयान प्रकाशित किया, पर जनता ने उन पर थू-थी की। मुकदमा चला और भगतसिंह ने फिर एक बार परी तरह से बताया कि दल किन उद्देश्यों को लेकर चल रहा है और क्या चाहता है। जब लोगों ने यह वक्तव्य पढ़ा, तब पता लगा कि क्रान्तिकारी किन उद्देश्यों को लेकर अब लड़ रहे हैं। उनका उद्देश्य न तो हिन्दू राज्य था, न मुस्लिम राज्य, बल्कि मेहनत करने वाले वर्ग का राज्य था।

दोनों अभियुक्तों को आजन्म कालापानी की सजा दे दी गई और भगतसिंह को लाहौर षड्यन्त्र के मुकदमे में ले जाया गया। भगतसिंह के अतिरिक्त सुखदेव, किशोरीलाल, विजयकुमार सिन्हा, कुन्दनलाल, शिवराम राजगुरु, शिव वर्मा, गयाप्रसाद, यतीन्द्रनाथ दास, जयदेव कपूर, कमलनाथ तिवारी, जितेन्द्र सान्याल, आशाराम, देशराज, प्रेमदत्त, महावीरसिंह, सुरेन्द्र पाण्डेय, अजय घोष पर मुकदमा चला। ७ अक्तूबर १९३० तक यह मुकदमा चलता रहा। इस मुकदमे का इतिहास स्वयं ही एक बहुत बड़ा इतिहास है। बीच में कई बार अनशन हुए। अभियुक्त बराबर अदालत के सामने नारे लगाते रहे और वक्तव्य देते रहे जो सारे अखबारों में प्रकाशित होते रहे। भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी तथा विजयकुमार सिन्हा, महावीरसिंह, किशोरीलाल, शिववर्मा, गयाप्रसाद, जयदेव और कमलनाथ त्रिवेदी को आजन्म कालेपानी, कुन्दनलाल को सात वर्ष और प्रेमदत्त को तीन साल की सजा हुई। मुकदमें की अपील प्रीवी कौन्सिल तक की गई, पर फाँसी की सजा बहाल रही और २३ मार्च १९३१ को भगतसिंह और उनके साथियों को फाँसी दे दी गई।

इसी बीच देश में बहुत कुछ हो चुका था। सत्याग्रह आन्दोलन चल चुका था और स्थगित हो चुका था। भगतसिंह की फाँसी से लोगों पर यह प्रकट हो चुका था कि सरकार किसी तरह समझौता करना नहीं चाहती। फिर भी कुछ लोग समझौते की आशा लेकर चल रहे थे।

भगतसिंह ने अन्तिम समय तक साहस का परिचय दिया। उन्होंने अपने भाई को एक पत्र में ये शेर लिखे थे-

उसे फ़िक्र है हरदम नया तर्जे जफ़ा क्या है,
हमें यह शौक है देखें सितम का इन्तहा क्या है।
घर से क्यों खफा रहे खर्च का क्यों गिला करे, सारा जहां अदू यह आओ मुकाबला करें।
कोई दम का मेहमां हूं ऐ अहले महफ़िल,
चिरागे सहर हूं बुझा चाहता हूं।
मेर हवा में रहेगी ख्याल की बिजली,
यह मुश्ते ख़ाक है फानी रहे या न रहे।

(मन्मथनाथ रचित 'भारत के क्रान्तिकारी' से)

वेदोक्त कर्म की उत्तमता

-आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक

कर्म शब्द कृ+मनिन् से बनता है। **क्रियते तत् कर्म क्रिया वा** अर्थात् जो किया जाए वह कर्म होता है। तो मन इन्द्रिय और शरीर से जीव चेष्टा विशेष करता है वह कर्म कहलाता है वह शुभ अशुभ और मिश्र भेद से तीन प्रकार का है। कोई एक क्षण भी बिना कर्म के नही रह सकता है कहा भी है- "**नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्म कॉत्**।" गीता २.४७ में कहा है "**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्माते संगोऽस्त्वकर्मणि**" अर्थात् कर्म करने में ही जीव का अधिकार है फल पाने में वह परतन्त्र हैं। गीता में- १) कृष्ण, २) शुक्ल, ३) शुक्लकृष्ण, ४) अशुक्लकृष्ण रूप में चार प्रकार के कर्मों की चर्चा प्राप्त होती है। एक कर्म वे होते हैं जिनको करने में मन स्वयं लगता है दूसरे वे जिनमें मन को लगाना पड़ता है। (ये ही कर्म शुभ फल देने वाले होते हैं) । कृष्ण ने कर्मों की तीन स्थितियां बनाई हैं- १) प्रारम्भ में आनन्द देने वाला, बाद में कष्ट कारक, २) मात्रा में आनन्द देने वाला मात्रा से बाहर दुःख देने वाला, परन्तु तीसरा कर्म वह है जो प्रारम्भ में तो कष्ट सा अनुभव होता है पश्चात् आनन्द देता है। ऐसे ही कर्म पुण्य के रूप में परिवर्तित होते हैं ये ही मोक्ष के मार्ग को प्रशस्त करते हैं।

किया हुआ कर्म, फल के समय में कर्तृता ऐसे ढूँढ़ लेता है जैसे कोई बछड़ा अपनी माँ गाय को ढूँढ़ लेता है। "**यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्। तथा पूर्वकृतं कर्म कर्त्तारमनु गच्छति**।" वैदिक सिद्धान्त इस चीज को निश्चय पूर्वक स्पष्ट करता है हम जैसा जैसा जो भी मन, वचन और शरीर से कर्म करेंगे उसका वैसा-वैसा फल हम या तो स्वयं ले लें अथवा समाज, राजा आदि से मिल जाए, नहीं तो परमेश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होता है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के प्रकृति खण्ड के अध्याय ३७ के श्लोक ३७ में भी कहा गया है- "**न अभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**।" अर्थात् बिना भोगे कर्म समाप्त नहीं होते हैं चाहें करोड़ों कल्प ही क्यों न हो जाएं। क्योंकि शुभ अशुभ कर्मों का फल निश्चय ही भोगना पड़ता है। हमारे हाथ में बस इतना ही है कि हम अशुभ कर्म न करें और शुभकर्म ही करें तो हमें परिणाम स्वरूप शुभकर्म का फल भी अच्छा ही मिलेगा।

वैशेषिक ६.२.१ में फल की दृष्टि से कर्म के दो प्रकार कहे हैं-
"**दृष्टादृष्ट प्रयोजनानां दृष्टाभावे प्रयोजन मभ्युदगाय**"

अर्थात् दृष्ट फल इस जन्म के कर्म का, दूसरा अदृष्ट फल जो पूर्व जन्म का है। योग दर्शन में भी तीन प्रकार के कर्म फलों की चर्चा है- १) **क्रियमाण कर्म** जो वर्तमान में किया जाता है सो क्रियमाण कर्म कहता है। २) सञ्चित जो क्रियमाण का संस्कार ज्ञान में जमा होता है उसको सञ्चित संस्कार कहते हैं। ३) **प्रारब्ध** जो पूर्व किए हुए कर्मों के सुख-दुःख रूप फल का भोग किया जाता है उसको प्रारब्ध कहते हैं।

कर्म करने में ये तीन त्रुटियाँ नहीं करनी चाहिए। १) कर्तव्य कर्म न करना, २) अकर्तव्य कर्म करना, ३) कर्तव्य कर्म का उल्टा करना। जैसे कल्पना कीजिए आपको गेहूँ चाहिए अब पहली स्थिति गेहूँ प्राप्त न होने में यह है, कि आपने गेहूँ बोये ही नहीं। यह कर्तव्य कर्म का न करना है। दूसरी स्थिति है अपने बोया और उसमें पानी अधिक दे दिया यह अकर्तव्य कर्म करना है। तृतीय स्थिति यह है कि गेहूँ की जगह जो बो दिये यह कर्तव्य कर्म का उल्टा करना हो गया। हमें कर्म के इन दोषों से भी बचना चाहिए।

कर्म कब और कैसे करें-कुछ लोगों ने कहा "**काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होयगी बहुरी करेगा कब**" अर्थात् काम शीघ्र करना चाहिए। पुनः एक विचारधारा आयी "**आज करे सो काल कर, काल करे सो परसों। इतनी जल्दी क्या पड़ी है अभी पड़े हैं बरसों**" अर्थात् काम देर से करो। किसी ने कहा "शुभस्य शीघ्रम्" तो किसी ने कहा "जल्दी का काम शैतान का"। परन्तु जब इस विषय में महर्षि दयानन्द जी से पूछा कि काम जल्दी करें या देर में तो उन्होंने आर्य समाज के ५वें नियम में लिखा न काम जल्दीं करें न देर में, केवल इस बात का ध्यान रखें कि "**सब काम धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार कर करें**।" क्या सत्य है क्या असत्य है ये विचारें, सत्य हमें सुख देगा और असत्य हमेशा दुःख देगा।

अपने प्रत्येक कर्मों में रस की निष्पत्ति करना सीखें तो कर्म निश्चय ही आनन्द देने लगेंगे। जिस प्रकार सकाम कर्म लौकिक सुख प्रदान करने वाले होते हैं। वैसे ही निष्काम कर्म पारलौकिक आनन्द प्रदान करने वाले होते हैं। कर्मों की सुन्दर सी व्यवस्था का प्रतिपादन करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द जी कहते हैं जब पाप बढ़ जाता पुण्य घट जाता है तब मनुष्य जीव, पश्वादि नीच शरीर और धर्म अधिक तथा अधर्म न्यून होता है तब देव अर्थात् विद्वान् का शरीर मिलता है और जब पुण्य पाप बराबर होता है तब साधारण मनुष्य का जन्म होता है।

हमारा यह कर्तव्य है कि हम जीवन में परोपकार युक्त शुभ कर्मों को स्थान देते रहें और उसका शुभ फल पाते रहें और पुण्यों को एकत्रित करके परमपिता परमात्मा की गोद में स्थान पाएं। बस यही सिद्धान्त है जैसा करेंगे वैसा भरेंगे। यह कर्मफल मीमांसा अति गहन तथा दुर्ज्ञेय है। शुभाशुभ फलों के द्वारा इसका अनुमान ही किया जा सकता है। व्यास जी इसे स्वयं "**कर्मगतिर्विचित्र दुर्विज्ञानाचेति**" कहते हैं।

वेदोक्त कर्म की उत्तमता यजुर्वेद के अध्याय ४० मन्त्र २ में इस प्रकार से

प्रदर्शित की गई है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः । एवं त्वयि नान्यथेतोऽसित न कर्म लिप्यते नरे ।। इस मन्त्र का परिचय निम्न है-

ऋषिः - दीर्घतमा, देवता-आत्मा, छन्दः - भुरिगनुष्टुप्, स्वरः -गान्धार **विषय-वेदोक्त** कर्म की उत्तमता (यजु. ४०.१ में उपभोग की विधि बतलाकर यहां अब कर्म करने की रीति बतलाई गई है) ।

पदार्थ-मनुष्य (इह) इस संसार में **(कर्माणि)** धर्म युक्त वेदोक्त निष्काम कर्मों को **(कुर्वन्)** करता हुआ **(एव)** ही **(शतम्)** सौ **(समाः)** वर्ष **(जिजीविषेत्)** जीवन की इच्छा करे (एवम्) इस प्रकार धर्म युक्त कर्म में प्रवर्ततूमान **(त्वयि)** तुझ **(नरे)** व्यवहारों को चलाने हारे जीवन के इच्छुक होते हुए **(कर्म)** अधर्म युक्त अवैदिक काम्य कर्म **(न)** नहीं **(लिप्यते)** लिप्त होता **(इतः)** इससे जो अन्यथा और प्रकार से **(न अस्ति)** कर्म लगाने का अभाव नहीं होता है ।

भावार्थ-मनुष्य आलस्य को छोड़कर सब देखने हारे न्यायाधीश परमात्मा और करने योग्य उसकी आज्ञा को मानकर शुभ कर्मों को करते हुए अशुभ कर्मों को छोड़ते हुए ब्रह्मचर्य के सेवन से विद्या और अच्छी शिक्षा को पाकर उपस्थ इन्द्रिय के रोकने से पराक्रम को बड़ा कर अल्प मृत्यु को हटावे । युक्त आहार-विहारसे सौ वर्ष की आयु को प्राप्त होवें । जैसे मनुष्य सुकर्मों में चेष्टा करते हैं, वैसे ही पाप कर्म से बुद्धि की निवृत्ति होती और विद्या, अवस्था और सुशीलता बढ़ती है ।

सरलार्थ

कुर्वन् एव इह कर्माणि-मनुष्य इस संसार में वेदोक्त कर्मों को ही करते हुए । **जिजीविषेत् शतं समा** :-सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे ।

एवं त्वयि न अन्यथा इतः अस्ति-इससे भिन्न कोई और मार्ग नहीं है ।

न कर्म लिप्यते नरे-तू नर **(विद्या विरुद्धेषु कर्मफलेषु न रमते इति नरः)** है, उन कर्मों में लिप्त होकर रमण मत कर जो ज्ञान में विघ्न डालने वाले हो, अर्थात् ऐसे कर्म मत कर जो अन्तःकरण में अशुभ प्रभाव डालने वाले हैं ।

मन्त्र सार-१) वेदोक्त कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करें । २) कर्त्तव्य कर्म का कभी त्याग न करें और अन्तःकरण को मलिन करने वाले अशुभ कर्मों से सदा दूर रहें । ३) मनुष्य की उन्नति का इससे भिन्न और कोई दूसरा मार्ग नहीं है ।

प्रांजल व्याख्या

इस मन्त्र का आशय यह है कि मनुष्य कर्मों को करता हुआ सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे । परन्तु वह वेदोक्त, धर्मयुक्त व निष्काम कर्म ही होवें, मनुष्य पापयुक्त कर्मों को कदापि न करे । मन्त्र का आशय तो शुभकर्म करने से ही है, क्योंकि कर्म तो चोरी, झूठ, छल, कपट, असत्य आचरण आदि भी हैं । इसी कारण मन्त्र के दूसरे भाग में स्पष्ट कहा है, कि मनुष्य ऐसे कर्मों में कदापि लिप्त न हो जा बन्धन के कारण होते हैं । क्योंकि जिन कर्मों से बन्धन नहीं होता है वे ही निष्काम वेद विहित कर्म हैं ।

निष्काम कर्म करने वाला व्यक्ति कर्तव्य भावना से कर्म करता है और फल की इच्छा न करते हुए उसे भगवान पर छोड़ देता है । उसी निष्काम कर्म का फल ही मुक्तिरुप में साधक को मिलता है । जिन कर्मों में कर्ता का स्वार्थ होता है वही कर्म बन्धन कारक होते हैं । जितने दान पुण्यादि परोपकार के कर्म है उनमें यदि अपना स्वार्थ न रखा जाए तो वे सब निष्काम कर्म कहलाते हैं और ऐसे कर्मों को ही यज्ञ कहा जाता है ।

मन्त्र का पहला उपदेश है कि मनुष्य को न तो अकर्मी रहना चाहिए और न बुरे कर्म करने चाहिए अपितु निष्काम कर्म ही करने चाहिए । शुद्धाद्वैत मान्यता वाले तो इस मन्त्र के कर्माणि पद को इस रूप में प्रकट करते हैं **''तत्कर्म हरितोषं हि यत''** अर्थात् यहाँ कर्म उसी का नाम है जो भगवान की प्रसन्नता व आज्ञापालन के लिए किए जाएं इसके अतिरिक्त अन्य कर्म न होकर विकर्म की श्रेणी में आवेंगे ।

मन्त्र में सौ वर्ष का आयुमान साधारण है । ऐतरेय-२.१७ में भी कहा है **''शतायुर्वे पुरुषः''** । छान्दोग्य सं. १६-७ मे ऐतरेय महिदास की आयु ११६ वर्ष लिखी है- **''स ह षोडशं वर्ष शतमजीवत्''** । भाष्यकार महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य नवा में अपने समय में मनुष्यों की आयु में कमी देखकर लिखते हैं । **''किं पुनरद्यत्वे तिरं जीवति वर्ष शतं जीवति''** अर्थात् आजकल क्या है, जो अधिक जीता है तो सौ वर्ष तक जीता है । वैसे तो वेद में पूर्णायु ४०० वर्ष भी लिखी है । मन्त्र में सौ वर्ष का आयुमान कम से कम का है ।

ऋषि दयानन्द जी ब्रह्मचर्य का पालन, इन्द्रियों का संयम, आहार-विहार से युक्त होना और व्यायामादि को आयु बढ़ाने के कर्म स्वीकारते हैं । सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करने का भाव यह है कि इसके लिए यत्न भी करना चाहिए । केवल इच्छा के काम नहीं चलेगा । शास्त्र सौ तथा अधिक वर्षों तक जीने के निम्न उपाय वर्णित करता है शुद्ध आहार-विहार, उचित सोना-जागना, दीर्गदर्शी व समदर्शी होना, विषयों में लम्पट न होना, सत्यवक्ता होना दानशील व क्षमावान् होना ।

यह चर्चा मुख्यरुप से आयु की वृद्धि और निष्काम कर्म करने का उत्तम उपदेश देती है । शास्त्रानुसार सौ वर्ष तक कर्म करने से मनुष्य के चित्त की शुद्धि हो जाती है । यही शुद्धि मनुष्य के कर्मों में उत्तमता स्थापित करती है और शुद्ध कर्म जब शुद्ध ज्ञान व शुद्ध उपासना से युक्त होते हैं तो मनुष्य अपने परम लक्ष्य मुक्ति को प्राप्त कर लेता है ।

इस मन्त्र के सार को हम इस रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं कि मनुष्य निष्काम कर्म करता हुआ कर्म बन्धन के पाशों में नहीं फँसता है । मनुष्य शुभ कर्म करता हुआ ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करे और मोक्ष को प्राप्त करे । कर्मों के बन्धन से मुक्त होने का इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नही है ।

''जिजीविषेत्'' इस प्रथम पुरुष की क्रिया को **''उवट''** **जिजीविषेः** यों मध्यम पुरुष की क्रिया स्वीकारते हैं और यहाँ पुरुष व्यत्यय मानते हैं **''पुरुषव्यत्ययः प्रत्यक्ष कृतत्वात् मन्त्रस्य इति''** यहाँ उवट का मानना है कि पूर्व मन्त्र में कहा है कि ''तू त्याग पूर्वक भोग कर'' उसी के लिए यहाँ कहा है कि **''तू कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर''** । इसलिए ''जीने की इच्छा करें'' यह उचित नही है, अपितु प्रकरणानुरोध से इच्छा कर ही होगा । और यदि प्रथम पुरुष को मध्यम में न बदलना हो तो, **''जिजीविषेत्''** का कर्ता **''भवनान्''** मानकर आप जीने की इच्छा करें, यह अर्थ करनाचाहिए । परन्तु महर्षि दयानन्द जी वेदभाष्य में **''जिजीविषेत्''** का अर्थ ''जीने की इच्छा करें'' ही करते हैं । और सत्यार्थ प्रकाश के ७ समुल्लास में **''जीने की इच्छा कर''** करते हैं ।

अन्यत्र व्याख्यात-सत्यार्थ प्रकाश के ७ समुल्लास में इस उपरोक्त मन्त्र को महर्षि दयानन्द जी इस रुप में प्रस्तुत करते हैं-जो परमेश्वर की की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी न पावेगा । जैसे ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजी विषेच्छतं समाः'' परमेश्वर आज्ञा देता है कि मनुष्य सौ वर्ष पर्यन्त अर्थात् जब तक जीवे तब तक कर्म करता हुआ जीने की इच्छा कर, आलसी कभी न हो ।

व्याकरण-कुर्वन्नेव-

कुर्वन्+एव=**''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''** से 'न्' के बाद अच् रहने पर 'न' का आगम हुआ है ।

जिजीविषेच्छतं-जिजीविषेत्+शतम्=**'स्तोः श्चुना श्चुः'-त्** **को च । 'शश्छोऽटि'** श् को छ ।

कर्माणि-कृ+मनिन् (कर्म या भाव अर्थ में) **''कृञो भावे कर्मणि च मनिन्''** द्वितीया, बहुवचन । क्रियते तत् कर्म क्रिया वा, क्रियते इति सत् (निरु. ३.१)

लिप्यते-लिप् (रुधादि, उभयपदी) लट् (कर्मवाच्य) ।

नरे-नृ प्रापणे-अच्, नृणादि प्रापयति आन्नदमिति सप्तमी एकवचने । **(नृत्यन्ति कर्मसु** निरु. ५.१) नृ नये(भ्वा.) धातोः पचाद्यच् प्रत्यय कर्तृतरि ।

ఆర్య సమాజ్ నిజామాబాద్ ఆధ్వర్యంలో
హైదరాబాద్ విమోచన దినోత్సవము

ఆర్య సమాజ్ ఆధ్వర్యంలో గాంధీ చౌక్‌లో తెలంగాణ స్వాతంత్ర్య సమరయోధుల స్థూపం వద్ద హైదరాబాద్ విమోచన దినోత్సవము నిర్వహించనైనది. ఈ సందర్భంలో ఆర్య సమాజ అధ్యక్షులు శ్రీ కె.సూర్యప్రకాశ్ గారు మరియు ఇతర అధికారులు అందరూ పాల్గొని నైజాం అరాచాలకు వ్యతిరేకంగా ఆర్య సమాజ నాయకులు, కార్యకర్తలు చేసిన పోరాటానికి సంబంధించిన నాటి చరిత్ర చరిత్రాత్మకమైనది, స్ఫూర్తిదాయకమైనది. ప్రభుత్వం వారు ఈ చరిత్రను విద్యార్థులకు ప్రబోధించాలని మరియు విమోచన దినాన్ని ప్రభుత్వ పరంగా నిర్వహించాలని డిమాండ్ చేశారు. చిత్రంలో పండిత్ వేదమిత్ర గారు మాట్లాడుచున్నారు.

బాన్సువాడలో తెలంగాణ విమోచన దినోత్సవం

బాన్సువాడ సెప్టెంబర్ 17 ప్రభ న్యూస్

తెలంగాణ విమోచన దినోత్సవం బాన్సువాడ లో ఘనంగా జరిపారు పట్టణంలో ఆర్య సమాజంలో అధ్యక్షుడు నరేష్ ఆర్య జెండా ఆచరించి తెలంగాణ విమోచన గురించి వివరించారు అలాగే పట్టణంలో అన్ని ప్రభుత్వ కార్యాలయంలో జెండా ఆవిష్కరించారు

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥ ओ३म् ॥ वैदिक धर्म की जय

निमन्त्रण

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में
आर्य समाज किशन गंज व नगरद्वय की आर्य समाजों के सौजन्य से
आर्य समाज का ऐतिहासिक 85 वां

विजय दशमी शोभा यात्रा

श्री क्रोधि नाम संवत्सर अश्विन शु. दशमी
शनिवार दि. 12 अक्तूबर 2024 को सायंकाल 4-00 बजे से

श्री गडील आंजनेयुलु जी

प्रधान आर्य समाज कवाड़ीगुड़ा, हैदराबाद

रथारूढ़ होकर आर्य समाज किशनगंज से शोभा यात्रा का नेतृत्व करेंगे । शोभा यात्रा के आरम्भ में मन्त्री सभा श्री हरिकिशन रेड्डी वेदालंकार जी एवं उप्रधान डॉ. वसुधा शास्त्री जी के सानिध्य में आर्य समाज किशनगंज में अभिनन्दन समारोह होगा ।

अध्यक्षता : श्री ठा. लक्ष्मण सिंह जी, सभा उपप्रधान, अध्यक्ष जुलुस समिति

मुख्य अतिथि : श्री प्रेमसिंह जी राठोड़
सभा को सम्बोधित करेंगे ।

शोभा यात्रा की समाप्ति पर
आर्य समाज सुल्तान बाज़ार के पास आम सभा होगी ।

श्री विट्ठलराव आर्य जी
प्रधान सभा, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
सभा को सम्बोधित करेंगे ।

सभी प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर शोभा यात्रा को सफल बनाएं ।

आर्य समाज किशनगंज में प्रातः 9-00 बजे पर्वयज्ञ व 10-00 बजे ओ३म् ध्वजारोहण श्री गोविन्द प्रसाद उपाध्याय प्रधान आर्य समाज किशनगंज द्वारा सम्पन्न होगा ।

-: निवेदक :-

गोविन्द प्रसाद उपाध्याय	वैद्यनाथ आर्य	बृजगोपाल तिवारी	ठा.लक्ष्मण सिंह
प्रधान आर्य समाज किशनगंज	प्रधान संयोजक	मंत्री, आर्य समाज किशनगंज	उपप्रधान सभा

-: सह संयोजकगण :-

अशोक कुमार श्रीवास्तव, पं.वेदसिन्धु, विजयेन्द्र, ठा.दिनेश सिंह, पी.सुधाकर, के.नरसिंहराव, बी.ओंकार, बी.मधुकर, जे.डी.सुनील, प्रद्युम्न शास्त्री

माननीय श्री बण्डारु दत्तात्रेय जी महामहिम, माननीय श्री किशनरेड्डी जी केन्द्र मन्त्री को भी मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया है ।

కృణ్వన్తో విశ్వమార్యమ్ ॥ ఓ౩మ్ ॥ వైదిక్ ధర్మ్ కీ జై

ఆహ్వానము

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ ఆధ్వర్యమున
ఆర్య సమాజము కిషన్‌గంజ్, హైదరాబాద్ వారి సౌజన్యముతో
జంటనగరాల ఆర్య సమాజముల చారిత్రక 85వ

విజయ దశమి ఊరేగింపు

శ్రీ క్రోధినామ నామ సంవత్సర అశ్విన్ శుక్ల దశమి
శనివారము తేది 12 అక్టోబర్, 2024 రోజున సాయంత్రం 4-00 గంటలకు

శ్రీ గడీల ఆంజనేయులు గారు

అధ్యక్షులు ఆర్య సమాజ్, కవాడీగూడ, హైదరాబాద్

రథారూఢులై ఆర్య సమాజము కిషన్‌గంజ్ నుండి ఊరేగింపునకు నాయకత్వం వహిస్తారు. ఊరేగింపు ప్రారంభమున శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకార్ గారు మంత్రి సభ, డా॥ వసుధా శాస్త్రి ఉపప్రధాన్ సభ సాన్నిధ్యంలో ఆర్య సమాజము కిషన్‌గంజ్‌లో అభినందన సభ జరుగును.

అధ్యక్షులు : **శ్రీ ఠాకూర్ లక్ష్మణ్ సింగ్** గారు
సభ ఉపప్రధాన్ అధ్యక్షులు జులూస్ సమితి

ముఖ్య అతిథి : **శ్రీ ప్రేమ్‌సింగ్ రాథోడ్** గారు
సభను ఉద్దేశించి ప్రసంగించెదరు.

ఊరేగింపు ముగింపు కార్యక్రమము ఆర్య సమాజము, సుల్తాన్ బజార్ వద్ద జరుగును.

ఈ కార్యక్రమములో గౌ॥ **శ్రీ గడీల ఆంజనేయులు** గారు మరియు **శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య**, ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ, సభను ఉద్దేశించి ప్రసంగించెదరు.

ధర్మాభిమానులంతా అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని ఊరేగింపును జయప్రదం చేయగలరని కోరుచున్నాము.

ఆర్య సమాజము కిషన్ గంజ్‌లో ఉదయం 9-00 గంటలకు, పర్వ యజ్ఞము, ఉ॥ 10 గం॥లకు శ్రీ గోవింద ప్రసాద్ ఉపాధ్యాయ అధ్యక్షులు ఆర్య సమాజము కిషన్ గంజ్ గారిచే ఓ౩మ్ ధ్వజారోహణము జరుగును.

-: భవదీయులు :-

గోవింద్ ప్రసాద్ ఉపాధ్యాయులు	వైద్యనాథ్ ఆర్య	బృజ్‌గోపాల్ తివారి	ఠా॥ లక్ష్మణ్ సింగ్
ప్రధాన్ ఆర్య సమాజ్ కిషన్‌గంజ్	ప్రధాన సంయోజకులు	మంత్రి, ఆర్య సమాజ్ కిషన్‌గంజ్	సభ ఉపప్రధాన్

-: సహ సంయోజకులు :-

అశోక్ కుమార్ శ్రీవాస్తవ్, పం.వేదసింధు, విజయేంద్ర, ఠాకూర్ దినేశ్ సింగ్, పి.సుధాకర్ కె.నరసింగ్‌రావు, బి.ఓంకార్, బి.మధుకర్, జేడీ.సునీల్, ప్రద్యుమ్న శాస్త్రి

గౌ॥ శ్రీ బండారు దత్తాత్రేయ గారిని మరియు గౌ॥ శ్రీ జి.కిషన్‌రెడ్డి గారిని కూడా ముఖ్య అతిథులుగా ఆహ్వానించనైనది

శ్రీ గడీల అంజనేయులు

శ్రీ గడీల అంజనేయులు గారు, శ్రీ గడీల రామలింగం, శ్రీమతి గడీల నీలమ్మ దంపతులకు 31-01-1948 రోజున జన్మించినారు. శ్రీ గడీల అంజనేయులు గారి విద్యాభ్యాసము 1వ తరగతి నుండి 11వ తరగతి (హెచ్.ఎస్.సి.) వరకు ప్రభుత్వ పాఠశాలలో జరిగినది.

వీరు బాల్యములో ఆర్య సమాజమునకు వెళ్ళేవారు. 1961 సంవత్సరములో రాష్ట్రీయ స్వయంసేవక్ సంఘమునకు (ఆర్.ఎస్.ఎస్.) కూడా వెళ్ళేవారు. 1963 సంవత్సరం నుండి క్రియాశీల కార్యకర్తగా ఆర్య సమాజములో పని చేయడం ప్రారంభించినారు. మొదటి నుండి ప్రతి రోజు నిరంతరముగా ఉదయము యజ్ఞము చేసేవారు.

1969-1970 సంవత్సరములో తెలంగాణ కొరకు ఉద్యమములో పాల్గొని అరెస్ట్ అయ్యారు. 1970 సంవత్సరములో రైల్వే ఉద్యోగములో చేరి (ఎస్ & టి) సిగ్నల్ టెలి కమ్యూనికేషన్ వర్క్‌షాప్‌లో పని చేసినారు. దక్షిణ మధ్య రైల్వే (డి.ఎం.ఆర్.కె.ఎస్)లో మెంబర్ అయి, రకరకాల బాధ్యతలను స్వీకరించి రైల్వే కార్మికులకు సేవ అందించినారు. రెండు దఫాలుగా సౌత్ సెంట్రల్ రైల్వే జోనల్ అధ్యక్షులుగా సేవలు అందించినారు.

1975 సంవత్సరములో శ్రీమతి గడిల చంద్రకళతో వివాహము జరిగినది. వీరికి ఒక్క కూతురు. కూతురుకి ఝాన్సి లక్ష్మి అని నామకరణము చేశారు. 2005-2006 ప్రాంతములో ఎస్. & టి. వర్క్‌షాప్ మూసి వేస్తారని రేల్వే అధికారులు చెప్పడము జరిగింది. దానిని కాపాడడానికి డి.ఎం.ఆర్.కె.ఎస్. ద్వారా ప్రయత్నము చేస్తూ, అప్పటి మాజి రైల్వే మినిస్టర్ అయిన శ్రీ బండారు దత్తాత్రేయ గారిని కలిసి విషయాన్ని వివరించారు. శ్రీ బండారు దత్తాత్రేయ గారు ఎస్.ఆర్.టి. వర్క్‌షాప్‌కు వచ్చి మొత్తం సమస్యను పరిశీలించారు. వర్క్‌షాప్‌ను మూసివేయ కూడదని చెప్పి, వారు కూడ స్వతః ప్రయత్నము చేశారు. శ్రీ గడీల అంజనేయులు ఢిల్లీకి పలు పర్యాయాలు వెళ్ళి అక్కడ శ్రీ రుద్ర నారాయణ ఎం.పి. గారిని కలిసి వారితో బయలు దేరి రైల్వే బోర్డ్ అధికారులతో కలసి మాట్లాడము జరిగినది. ఇదే విధముగా ఆనాటి రైల్వే మినిస్టర్ శ్రీ లాలుప్రసాద్ యాదవ్ గారిని కూడ కలవడము జరిగినది. ఆ ప్రయత్నము వలన ఆర్.ఎస్.టి. వర్క్‌షాప్ మూసి వేయకుండ ఇప్పటికి నడుస్తున్నది.

అయోధ్య రామ జన్మ భూమి ఉద్యమములో (1990-1992) రెండు సార్లు కరసేవకునిగా వెళ్ళి అందులో పాల్గొనడమైనది. 1990 మొదటి కరసేవలో పాల్గొని అరెస్ట్ అయి ఉత్తర ప్రదేశ్‌లో నైని జైల్‌లో శిక్ష అనుభవించడమైనది.

1935వ సంవత్సరములో శ్రీ కృష్ణ స్వామి నాయుడు గారు, శ్రీ నారాయణ స్వామి నాయుడు గార్లు సోదరులు కలసి కవాడిగూడలో ఆర్య సమాజమును ప్రారంభించినారు. ఆనాటి రజాకార్ల అరాచకాలకు వ్యతిరేకంగా ఉద్యమములో కవాడిగూడ ఆర్య సమాజ ప్రముఖ పాత్ర వహించిన కార్యకర్తలకు పూజ్యశ్రీ పండిత్ నరేంద్ర జీ సమాజానికి వచ్చి ప్రేరణ ఇచ్చేవారు.

ఈ సమాజము వారు 1950లో సమాజ భవనములో ప్రభుత్వ పాఠశాలను ప్రారంభించి ఉచిత నిర్వహణ చేస్తూ వచ్చారు. 1970 సంవత్సరంలో భవనము లోప భూయిష్టంగా ఉండటంవల్ల శిథిల అవస్థలోకి వచ్చింది. కావున పాఠశాలను ఖాళీ చేయించాలని అధికారులన్నారు. ఈ కారణం వల్ల పాఠశాలను ఖాళీ చేయించారు. ఆ తదుపరి భవనమును రిపేర్ చేయించి విద్యాశాఖ అధికారుల వద్దకు వెళ్ళి, తిరిగి అనుమతిని పొంది పాఠశాలను పునః ప్రారంభించారు. తదుపరి కొన్ని గదులను ఏర్పాటు చేసి విరజానంద వైదిక పాఠశాల 1972లో ప్రారంభించనైనది. ఇందులో శ్రీ గడీల అంజనేయులు గారి పాత్ర ప్రముఖమైనది. అంజనేయులు గారి ప్రయత్నము వల్లనే ఆర్య సమాజము మరియు పాఠశాల భవనము నాలుగు అంతస్తుల భవనముగా మారినది. ఇప్పుడు 10వ తరగతి వరకు గుర్తింపు పొందిన పాఠశాలగా నిర్వహించబడుచున్నది. రోజుకు ఒకసారి ఉచిత భోజనము కూడా ఇవ్వడము జరుగుచున్నది.

విరజానంద విజ్ఞాన కేంద్ర వ్యవస్థాపకులు శ్రీ గడీల అంజనేయులు గారు వివిధ పాఠశాలల నుండి అనేకమంది విద్యార్థులను పిలిచి వారికి వ్యాస రచన పోటీ నిర్వహించేవారు. దీనితో పాటు ఈశ్వర ప్రార్థన, సంధ్యా మంత్రములు, వందేమాతరం పూర్తి పాట, ఉపన్యాస పోటీలు, దేశభక్తి పాటలు, భగవద్గీత శ్లోకాలు, క్విజ్ పోటీలు ప్రతి సంవత్సరం నవంబర్ నెలలో నిర్వహించి గెలుపొందిన వారికి 23 డిసెంబర్ స్వామి శ్రద్ధానంద సరస్వతి వర్ధంతి రోజున బహుమతులు ఇవ్వడము జరుగుచున్నది. ఇందులో ఇంటర్మీడియట్ విద్యార్థులు కూడా పాల్గొనుచున్నారు. శ్రీ గడిల అంజనేయులు ఆర్య కుమార్ సభ, మహిళ ఆర్య సమాజంతో కలసి ప్రతి సంవత్సరము నేతాజీ సుభాష్ చంద్ర బోస్ జయంతి సందర్భమున ఆటల పోటీలు నిర్వహించి అదే రోజు బహుమతులు అందిస్తుంటారు.

ఆర్య సమాజము ప్రారంభించి 128 సంవత్సరములు పూర్తి అయిన సందర్భములో 2002 సంవత్సరములో 1250 యజ్ఞ కుండములతో గాయత్రి మహాయజ్ఞము నిర్వహించుటకు సికింద్రాబాద్‌లోని వ్యాపారస్తులను కలిసి, కమిటిని ఏర్పాటు చేసి బృహద్ కార్యక్రమమును ప్రాంత స్థాయిలో నిర్వహించారు.

2006 సంవత్సరములో పూజ్య స్వామి విశ్వంగ్ గారిచే 125 యజ్ఞ కుండములతో విశ్వశాంతి గాయత్రి మహాయజ్ఞమును నిర్వహించారు. ఈ సందర్భమున స్వామి విశ్వంగ్ గారి ద్వారా రోగనివారణ యోగా శిబిరమును నిర్వహించారు. 2008లో మహర్షి యోగ సమితిని ఏర్పాటు చేసి 2008, 2011, 2012 సంవత్సరములలో పూజ్య స్వామి విశ్వంగ్ జీ ద్వారా రోగ నివారణ యోగ శిబిరమును నిర్వహించారు.

సిద్ధిపేట దగ్గర తిమ్మారెడ్డి పల్లె గ్రామములో 5 యజ్ఞ కుండములతో రెండు రోజులు యజ్ఞ కార్యక్రమమును కూడా పూజ్య స్వామి విశ్వంగ్ గారి సమక్షంలో నిర్వహించనైనది. కవాడిగూడ ఆర్య సమాజ్ ఆధ్వరములో ప్రతి సంవత్సరము వేసవి సెలవులలో ఉచిత వ్యక్తిత్వ వికాస్ శిబిరము కూడా నిర్వహిస్తున్నారు.

జంటనగరాల ఆర్య సమాజములు

హైదరాబాద్

ఆర్య సమాజము, సుల్తాన్ బజార్	ఆర్య సమాజము, చాదర్‌ఘాట్
ఆర్య సమాజము, కిషన్‌గంజ్	ఆర్య సమాజము, గుడిమల్కాపూర్
ఆర్య సమాజము, శ్రద్ధాబాద్	ఆర్య సమాజము, ఆగాపుర
ఆర్య సమాజము, మాదన్నపేట	ఆర్య సమాజము, చెంగిచెర్ల
ఆర్య సమాజము, కుర్మగూడ	ఆర్య సమాజము, బల్కంపేట్
ఆర్య సమాజము, ఓంనగర్	ఆర్య సమాజము, జంగంమెట్
ఆర్య సమాజము, యాకుత్‌పుర	ఆర్య సమాజము, ఛత్రీనాకా
ఆర్య సమాజము, వైదిక్ బజార్	ఆర్య సమాజము, లక్ష్మీనగర్
ఆర్య సమాజము, మలక్‌పేట్	ఆర్య సమాజము, మీర్‌పేట్
ఆర్య సమాజము, చైతన్యపురి	ఆర్య సమాజము, గోశామహల్
ఆర్య సమాజము, దిల్‌సుఖ్‌నగర్	ఆర్య సమాజము, సీతారాంబాగ్
ఆర్య సమాజము, ఉందాబజార్	ఆర్య సమాజము, రహీంపుర
ఆర్య సమాజము, అశోక్ బజార్	ఆర్య సమాజము, దయాల్‌బౌలి
ఆర్య సమాజము, ధ్రువపేట్	ఆర్య సమాజము, సుల్తాన్‌షాహి
ఆర్య సమాజము, చంద్రికాపూర్	ఆర్య సమాజము, ఆర్యాబాద్
ఆర్య సమాజము, కార్వాన్	ఆర్య సమాజము, గన్‌ఫౌండ్రీ
ఆర్య సమాజము, షాలిబండ	ఆర్య సమాజము, కవాడిగూడ
ఆర్య సమాజము, ఉప్పుగూడ	ఆర్య సమాజము, కూకట్‌పల్లి

సికింద్రాబాద్

ఆర్య సమాజము, ఆర్.పి.రోడ్	ఆర్య సమాజము, బోయిన్‌పల్లి
ఆర్య సమాజము, సీతాఫల్‌మండి	ఆర్య సమాజము, బొల్లారం
ఆర్య సమాజము, లాలాగూడ	ఆర్య సమాజము, మెడిబావి

ఆర్య సమాజము, సుచిత్ర

అభ్యుదయము యొక్క దీపశిఖ

హిందీ మూలం :
డా॥ సురేంద్ర సింగ్, కాదియాణ్

తెలుగు అనువాదము :
ఆచార్య అరవింద్ శాస్త్రి, హైదరాబాద్

సంస్కృత వ్యాకరణము ననుసరించి మనస్సు (మనస్-పదము)ను నపుంసిక అంగముగా భావించి ఉపాసనా ప్రసంగంలో ఒక కవి కథనము ఇలా ఉంది-

మనః కుత్రోద్యోగః సపది వదమే గమ్య పద వీమ్, నరేవా నార్యంవా? గమనము భయత్రా ప్యను చిత్తమ్ । యతస్తే క్లీవత్వ, ప్రతిపద మహోహాన్య పదవీమ్, జనస్తోమే మా గాస్త్వ మనుసరహి బ్రహ్మ పదవీమ్ ॥

ఓ మనసా ! నీవు ఎకడికి వెళ్ళాలను కొంటున్నావు, నరుని వైపా లేక నారీ వైపా ? నీవు రెండు వైపులా వెళ్ళడమూ అనుచితమే, ఎందుకనగా నీవు నపుంసకుడవు. నరుడు లేక నారీమణుల సమూహము లోకి వెళ్ళి అడుగడుగునా నిన్ను నీవు హేళన చేసుకో వలదు. నీవు బ్రహ్మ వైపు మరలడము మంచిది. ఎందుకనగా అతడు కూడా నపుంసకుడే. మన వారి మధ్య ఉండడం ఎప్పటికీ శ్రేయస్కరము.

అస్తమించే జీవితంలో మనుష్యునకు ఎలాంటి ఆపద కలుగ నీయని వాడు బ్రహ్మ. కాని నిండు యవ్వనంలో ఏ యువకుడైనా బ్రహ్మ యొక్క శరణాగతుడై, ఇంటిని విడిచి వెళ్ళి పోయి ఒక లక్ష్యము కొరకు సర్వాత్మనా సమర్పితుడై కార్యార్థి యైనచో ఇక ఆ వ్యక్తి గురించి చెప్పేదేముంది ? ఈ విషయంలో సంస్కృత కవి మౌనము దాల్చాడు. జీవితంలో ఇలా కూడా జరుగుతుందని బహుఃశా ఊహించి కూడా ఉండడు. ఇలాంటి ఘటనలు అరుదుగా జరుగుతాయని భావించ బడుతుంది. కాని అరుదుగా జరిగే అతలమైన లోతు లోకి తొంగి చూస్తే ప్రయాసను మనలో ఎంత మంది చేస్తారు. స్వామి ఇంద్రవేశ్ మహారాజ్ గారి అంత్యేష్టి సంస్కారము తదుపరి శోకతప్తులైన వ్యక్తులను సంభోధించి స్వామి అగ్నివేశ్ గారు ఈ విధంగా సంబోధించారు-ప్రార్థన శరీరంపై జ్వలిస్తున్న ఈ చితాగ్నిని మనము మనలో ప్రజ్వలింప జేయాలి. ఎందుకనగా ఈ చితాగ్ని సాధారణ మానవునికి చెందినది కాదు. ఈ అగ్ని ఎలాంటి అసాధారణ వ్యక్తికి చెందినదంటే అది నాలాంటి అసంఖ్యాక మనుష్యుల నిర్మాణము గావించింది. అతడు జీవించి ఉన్నప్పుడు మనము ఆ శిల్పి యొక్క యోగ్యత మరియు పనితనము (ను అర్థము చేసుకోలేక పోయాము. అతని యొక్క ఈ మాటల్లో ఎలాంటి అతిశయోక్తి లేదు. ఒకవేళ మనము స్వామీ ఇంద్రవేశ్ జీ మహారాజ్ గారిజీవన వృత్తాంతముపై దృష్టి సారించినచో శ్మశాన వైరాగ్యము చేత అభిభూతమైన ఆ సత్యము- స్వామి అగ్నివేశ్ గారు ఆ రోజు దయానంద్ మఠ్, రోహతక్‌లో చెప్పిన మాటలలో మనకు సాక్షాత్కారమవుతుంది.

క్రీ.శ.1967లో ప్రొఫెసర్ శ్యామ్‌రావు (స్వామీ అగ్నివేశ్ గారి పూర్వ నామము) గారి యొక్క మొదటి భేట్ బ్రి.ఇంద్రదేవ్ మేధార్థి (స్వామి ఇంద్రవేశ్ గారి యొక్క పూర్వ నామము) గారితో గురుకుల్ ఝఝర్‌లో జరిగినది. ఆ రోజులలో పొలము గట్టుపై కూర్చొని భావి కార్యక్రమాన్ని నిర్ధారించే సమయంలో ఎవరికి తెలుసు ? ఆ రామ- లక్ష్మణుల జంట ఆర్య సమాజంలో అభ్యుద యమనే దీప శిఖను ప్రజ్వలింప జేస్తారని స్వామీ ఇంద్రవేశ్ జీ గురుకులము యొక్క ఆ తపోభూమిలో తపస్సు చేశారు. వీరిని స్వామీ ఓమానందుల వారు తపింపజేసారు. అదే సమయంలో స్వామీ అగ్నివేశ్ గారు స్వామీ సమర్పణానంద్ గారి ఉపదేశామృ తాన్ని ఆస్వాదించి కార్య క్షేత్రంలో కాలు మోపారు. ఆకర్షణీయ వ్యక్తిత్వము, ఓజస్వీ పూర్ణ ఉపన్యాస శైలితో కూడుకొన్న వీరి పదార్పణము ఆర్య సమాజము యొక్క వేదికపై పడినప్పుడు ఆర్య జనులందరికే సహజంగా అతని యొక్క హూంకారముతో ఆర్యులలో గూడు కట్టుకొన్న నిస్తేజత్వము పటాపంచలగుతుందనే విశ్వాసము కలిగినది. క్రాంతికారకమైన భావాల ప్రస్ఫుటము వీరి శ్రీ ముఖము నుండి వెలువడుతున్నప్పుడు శ్రోతలందరూ ఉత్సాహము ఊగి పోయే వారు. "ఆర్య రాష్ట్ర స్థాపన" అనే వారి యొక్క ఉద్ఘోష ఆకాశంలో గడగడలాడే విద్యుత్తు యొక్క శబ్దము ప్రతి శ్రోతలకు ఊరట ఇచ్చేదిగా ఉండినది. విశేషించి యువకుల యొక్క రోమ-రోమము వీరి ఉపన్యాసాలను విని పులకించి పోయేది. వారిద్దరి హృదయాలలో సంకల్పాగ్నిని వ్యావహారిక రూపములో తేవడానికి 1980 సం॥లో స్వామి బ్రహ్మ ముని గారితో సన్యాస దీక్ష స్వీకరిం చారు. వారిలో స్వామి బ్రహ్మముని గారితో సన్యాస దీక్ష స్వీకరించారు. వారి ఈ చర్యతో భయభీతులై ఆచార్య భగవాన్ దేవ్ గారు వీరికంటే ఒక రోజు ముందే తత్పరులై మేల్కొని సన్యాస ధర్మాన్ని స్వీకరించారు. ఈ పోటీ భావానికి కారణమేమంటే ఇంద్రదేవ్ మేధార్థి లేకుండానే గురుకుల్ ఝఝర్‌ను విడిచి వెళ్ళి పోయారు. ఆ సమయంలో లాలా రామ్ గోపాల్ శాల్‌వాలే గారు వారి ఆశీర్వాద హస్తాన్ని ఈ ఇద్దరు యువకులపై ఉంచారు. దీక్షా సమారోహము జరిగిన తర్వాత ఆ ఇరువురు యువకులకు ఆర్య సమాజ నేతల సన్యాసులు, విద్వాంసులు, ఉపదేశకులు, పురోహితులు, శాస్త్రార్థ మహారథులు మొదలైన వారి నుండి అభినందన సందేశాలు అంది నవి. దీనివల్ల తెలిసేదేమిటంటే ఆర్య సమాజానికి సంజీవనీ పానము యించగల వీరిద్దరు యువకులపై అపారమైన విశ్వాసము ఉండేది. అభినందించే వారి సూచీ చాలా విస్తృతముగా ఉండినది. కాని ఉదాహరణ కొరకు కొన్ని పేర్లు-స్వామి బ్రహ్మానంద జీ దండి (ఏటా), ఆచార్య ధర్మదేవ్ జీ విద్యా మార్తాండ్ (జ్వాలాపూర్), ఆచార్య ప్రియవ్రత్ (గురుకుల్ కాంగ్డీ విశ్వవిద్యాలయము), శాస్త్రీ దేవి (అమర్ షహీద్ రామ్ ప్రసాద్ బిస్మిల్ గారి సోదరీమణి), శివకుమార్ శాస్త్రి (ఎం.పి.), పండిత్ ఫూల్ చంద్ శర్మ "నిడర్"

(భివాని), పం. సమర్ సింహ్ వేదాలంకార్ (రోహతక్), ఓ3మ్ ప్రకాశ్ త్యాగి (ఎం.పి.), ఓమ్‌ప్రకాశ్ శాస్త్రి (ఖతాలి), రామ్‌గోపాల్ శాల్ వాలే (ఎం.పి.), మహాత్మా ఆనంద్ భిక్షు, వీరేంద్ర (దైనిక్ ప్రతాప్ పత్రిక సంపాద కులు), స్వామి వ్రతానంద్ (గురుకుల్ చిత్తౌడ్, స్వామి సర్వానంద్ (దీనానగర్), రఘువీర్ సింహ్ శాస్త్రి (ఎం.పి.), యుధిష్ఠిర్ మీమాంసక్, జగ్‌దేవ్ సింగ్ సిద్ధాంతి, వీర్‌సేన్ వేదశ్రమీ (ఇండౌర్), శాంతి ప్రకాశ్ (గురు గ్రామ్), ప్రకాశ్‌వీర్ శాస్త్రి (ఎం.పి.), అమర్ స్వామి పరివ్రాజక్, స్వామి భీష్మ (ఘరౌంధా) మొదలైన వారి పేర్లు ప్రముఖ మైనవి. ఆ సమ యంలో ఎవ్వరూ వారిని కమ్యూనిస్ట్ లుగా దోషారోపణ చేయలేదు. ఆర్య సమాజము యొక్క భవిష్యత్తు వీరిద్దరి చేతులలో సురక్షితంగా ఉండగలదని విశ్వసిం చారు. కొంత మంది మఠాధీశుల నుండి విరోధము ఉండ గలదని వారి నుంచి సావధానంగా ఉండాలని మరికొంత మంది శుభ చింతకులు వీరిరు వురిని జాగ్రత పరిచారు.

వీరు సన్యాస దీక్ష స్వీకరించగానే 22 మంది యువకులు కూడా సన్యాస దీక్ష తీసి కొని వారి మనోబలాన్ని పెంచారు. వారిలో ఆచార్యులు మరియు స్నాతకోత్తరులు **(Post Graduates)** కూడా ఉండిరి. సన్యాసము స్వీకరించగానే ఆర్య రాష్ట్ర నిర్మాణము కొరకు వీరు "ఆర్య సభ" అనే రాజకీయ పార్టీని ఏర్పాటు చేసి అందరి మధ్య ఘోషణ చేశారు. "రాజధర్మ్" పత్రికను ప్రారంభించి వైదిక సమాజ వాదము పేరుతో భారతీయుల రాజనీతిలో ఒక నూతన ఆలోచనా సరళిని ప్రవేశ పెట్టారు. 1967లో స్థాపించబడిన ఆర్య యువ పరిషత్తు కూడా ఆ మధ్య కాలంలో సుస్థాపితమైనది. దాని విస్తారము హర్యాణ రాష్ట్ర పరిధిని మించి తన ప్రభావాన్ని చూపించిద. వారి ఉత్సాహము యొక్క ఘనతను తెలిపే సంఘటన ఒకటి జరిగింది. అదేమనగా జూన్ 1967లో కుండలి అనే ప్రదేశంలో ఉన్న పశువధశాల (cattle killing factory)పై దాడి చేసి రెండు ట్రక్కుల (లారీలు)తో నిండి యున్న మేకలను వారి చెర నుండి తప్పించారు. దీనికి భయపడి ఆ ఫాక్టరీ యజమానులు స్వయంగా ఆ పశు వధ శాలని మూసి వేశారు. అదే సంవత్సరము అక్టోబర్‌లో కురుక్షేత్రము నుండి ఢిల్లీ వరకు గల 200 కిలోమీటర్ల రహదారిలో మధ్య నిషేధము కొరకు పాదయాత్ర చేశారు. నవంబర్ 1968లో "రాజధర్మ" పత్రిక పాక్షికంగా (15 రోజుల కొకసారి) అచ్చు వేసి పంపకము చేయుట ప్రారంభించ బడినది. అది తర్వాత దినపత్రికగా మారినది. ఈ పత్రిక విదేశాలలో నివసించే వారికి కూడా పంపడం ప్రారంభమైనది. క్రీ.శ. 1969లో సార్వదేశిక్ ఆర్య యువక్ పరిషద్ యొక్క శాఖలు హరియాణాలోనే కాకుండా ఉత్తర్‌ప్రదేశ్, పంజాబ్, మహారాష్ట్ర, ఆంధ్ర ప్రదేశ్, జమ్ము-కశ్మీర్, మధ్యప్రదేశ్, రాజస్థాన్, ఒరిస్సా, హిమాచల్ ప్రదేశ్‌లలో స్థాపించ బడినవి. క్రీ.శ.1969-70 దాని బడ్జెట్ ఒక లక్షరూపాయల వరకు ఉండినది. దీనిని బట్టి ఒక సంవత్సర కాలంలోనే ఆర్య యువక పరిషత్, రాజధర్మ్ పత్రికలు ఎంత విశాలంగా విస్తరించినవో ఎంత లోకప్రియమైనవో మనకు అవగత మవుతుంది. కాని ఈ ఆర్య యువకుల యొక్క ఘనమైన ఉత్సాహము (జోష్) ఆర్య సమాజము యొక్క మఠాధీశులకు నిద్ర లేకుండా చేసింది. 1973 సంవత్సరములో స్వామి రామేశ్వరానంద్ వంటి పేరు గాంచిన వ్యక్తిని ఆర్య ప్రతినిధి సభ, పంజాబ్ (ఉమ్మడి రాష్ట్రము) ఎన్నికలలో ఓడించి స్వామి ఇంద్రవేశ్ గారు ప్రధానిగా పన్ని వీరి వెంట పడ్డారు. ఈ కుట్రల కారణంగా వీరిని కమ్యూనిస్ట్‌లుగా చిత్రించి వారిని నిందించడము మొదలు పెట్టారు. దీనిలో జనసంఘ్ మరియు ఆర్.ఎస్.ఎస్. యొక్క పాత్ర కూడా ఉండినది. కారణమే మనగా వీరి వల్ల ఆ సంస్థల యొక్క సమీకర ణలు కూడా మారి వారికి చిక్కులు ప్రారంభ మైనవి. ఈ కుట్ర యొక్క సర్వాధిక వికృత రూపము వల్ల వీరిని మూడు సార్లు ఆర్య సమాజము నుండి వెలివెయడం జరిగినది. ఆర్య సమాజ వేదిక వీరి కొరకు మూసి వేయబడినది. ఆర్య ప్రతినిధి సభ, పంజాబ్‌ను మూడు ముక్కలు చేసి వీరిని ధరాతలానికి తోసి వేసే కుత్సిత ప్రయత్నము జరిగినది. హరియాణాయే కాకుండా ఢిల్లీ, పంజాబ్, చండీఘడ్, ఉత్తర్‌ప్రదేశ్, రాజస్థాన్‌కు చెందిన మఠాధీశులు వీరిని వెంటాడుటకు కృత నిశ్చయులైనారు. క్రీ.శ.1974లో మీరఠ్‌లో జరిగిన ఆర్య సమాజ స్థాపనా శతాబ్ది సమారోహము యొక్క వేదిక పైకి రావడానికి ప్రకాశ్‌వీర్ శాస్త్రి గారు అడ్డగించారు. క్రీ.శ. 1983లో అజ్మీర్‌లో జరిగిన మహర్షి దయా నంద సరస్వతి నిర్వాణ శతాబ్ది సమారో హంలో వేదిక పైకి వీరు రాకుండా పరోప కారిణీ సభ వారు నిషేధించారు. ఈ రెండు ఘటనలు నా కళ్ళ ముందే జరిగినవి.

ఇంత ఉపేక్ష, ఇంత అవమానము, ఇంత ప్రబల విరోధమును అనుభవించిప్పటికీ వేశ ద్వయం. (స్వామి ఇంద్రవేశ్, స్వామి అగ్నివేశ్) యొక్క క్రియా కలాపాలు సజీవంగా సాగినవి. ఈ ఇద్దరు మహారథులు ఆర్య సమాజము యొక్క ఒక బలమైన పక్షమును స్థాపించడము వల్ల దీని యొక్క సహస్యము ఎంత శక్తివంత మైనదో సుస్పష్టము. దీని వెనుకనున్న రహస్యము స్వామీ ఇంద్రవేశ్ జీ మరియు వారి యొక్క నమ్మకము పరమాత్ముడు, పరిశ్రమ మరియు సంఘర్షణలో వారి నిశ్చయమైన భావన. వారు యువకుల హృదయాలపై గట్టి పట్టు కలిగి యుండే వాడు. జీవితంలో వారెప్పుడూ అస్థికత లేక బలహీనత చూప లేదు. మఠాధీశుల ముందు మోకరిల్ల లేదు. తన ఉద్యమాన్ని అన్ని విధాల ఉపాయాలతో సజీవంగా ఉంచారు. సార్వ దేశిక్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ యొక్క శిబిరములు యథావిధిగా నడిచేవి. రాజధర్మ పత్రిక నిరంతరము ప్రకాశితమగుతుండేది. స్వామి అగ్నివేశ్ గారు బాల్య రక్షణ, వెట్టి చాకిరీ విముక్తి మోర్చా (బచ్‌పన్ బచావో, బంధువా

ముక్తి మోర్చా) ఉద్యమాల మాధ్యమంగా విశ్వమంతటా ఖ్యాతి నార్జించారు. ఒక మగవాడుగా కేలేరని వారు తరచూ చెబుతుండే వారు. ఇంత వికట సంఘర్షణ ఆర్య సమాజంలో మరి ఎవరూ చేయలేదు. ఆర్య యువకుల కొరకు వారు ఎల్లప్పుడు అభ్యదయము యొక్క దీపశిఖగా ప్రజలిస్తూనే ఉంటారు. స్వామి ఇంద్రవేశ్ జీ గారి సహకారముతో, వారి ప్రేరణతో ఢిల్లీ దేవరాలా, సతీ-ప్రథా (సతీసహగమన దురాచారము) విరోద పాద యాత్ర జరిపారు. నాథ్ ద్వారాలో హరిజనులకు మందిర ప్రవేశము కల్పించడానికి ఉద్యమము నడిపారు. పురామహాదేవ్ అనే స్థానంలో స్వామి శంకరాచార్య గారు ఆచార్య సావిత్రీ దేవి గారితో శాస్త్రార్థము చేయుటకు సవాలు చేశారు. క్రీ.శ.1983లో ఢిల్లీలోని రామ్‌లీలా మైదానంలో మహర్షి దయాన్ద సరస్వతి గారి బలిదాన శతాబ్ది నిర్వహించారు. తాత్‌కటోరా స్టేడియంలో మూడురోజుల ఆర్య మహాసమ్మేళనము జరిపారు. ఢిల్లీలోని హిందూ భవన్‌లో రెండు రోజుల ఆర్య యువక సమ్మేళనము సంపన్నము చేశారు. జంతర్-మంతర్ గేట్ వద్ద మరియు దూరదర్శన్‌లో అశ్లీల కార్యక్రమాల ప్రదర్శనను నిరసిన్తూ ఉద్యమించారు. విదేశాలలో వైదిక ధర్మ ప్రచారము గావించారు. కుంభ మేళా సందర్భములలో వేద ప్రచార శివిరము నడిపారు. హర్యాణాలో మద్య నిషేధ ఉద్యమాన్ని నడిపారు. ఢిల్లీలో మద్య నిషేధ సమ్మేళనమును ఏర్పాటు చేసారు. స్వామి ఇంద్రవేశ్ గారు పార్లమెంట్‌కు ఎం.పి.గా ఎన్నికైతే, స్వామి అగ్నివేశ్ గారు హరియాణాలో ఎం.ఎల్.ఎ.గా ఎన్నికై విద్యామంత్రివ తమ సేవలందించారు. కౌన్యా-బ్రూణ హత్యా విరోధ సర్వ ధర్మ జన చేతన యాత్రలో వీరి నేతృత్వము సమస్త నిర్వకులకు లభిఇచినది. చివరకు సార్వదేశిక్ సభను ఏర్పాటు చేసి మహర్షి దయానంద భవన్‌లో ప్రవేశించడములో సఫలమైనారు. ఈ విధంగా స్వామి ఇంద్రవేశ్ జీ ఆర్య సమాజంలో సంఘర్షణకు మారు పేరుగా నిలిచారు. వీరు ఎల్లప్పుడు క్రియాశీలంగా ఉండిరి.

ఈనాడు జిల్లా వార్తలు

దసరా వేడుకలు వైభవంగా నిర్వహిద్దాం: ఎమ్మెల్యే

మహబూబ్‌నగర్ సాంస్కృతికం, న్యూస్‌టుడే: ఈ ఏడాది దసరా పర్వదినాన్ని వైభవంగా జరుపుకొందామని ఎమ్మెల్యే యెన్నం శ్రీనివాస్‌రెడ్డి అన్నారు. జిల్లా కేంద్రంలోని ఆర్యసమాజ్ మందిరంలో ఆదివారం నిర్వహించిన దసరా ఉత్సవ కమిటీ సమావేశంలో ఎమ్మెల్యే మాట్లాడారు. ఏటా గణేశ్ పర్వదినం మాదిరే దేవీ శరన్నవరాత్రులు భక్తిశ్రద్ధలతో జరుపుకోవాలని విజ్ఞప్తి చేశారు. పర్వదినాల్లో ఎలాంటి రాజకీయ జోక్యం లేకుండా స్వేచ్ఛాయుతంగా, ప్రశాంత వాతావరణంలో నిర్వహించుకునే సంప్రదాయం పెరగాలన్నారు. ఉత్సవాల నిర్వహణ ఖర్చుల నిమిత్తం మున్సిపల్ కౌన్సిల్ నుంచి రూ.3 లక్షలు, తన వంతుగా రూ.50 వేలను అందజేయనున్నట్లు ఎమ్మెల్యే యెన్నం హామీనిచ్చారు. పుర అధ్యక్షుడు ఆనంద్‌కుమార్‌గౌడ్ మాట్లాడుతూ పండుగలు ప్రజల్లో ఐక్యతను పెంపొందిస్తాయన్నారు. ఈ ఏడాది ధ్వజధారిగా వీరన్నపేట కౌన్సిలర్ అచ్చుగట్ల అంజయ్యను దసరా ఉత్సవ కమిటీ ఎంపిక చేసింది. కార్యక్రమంలో ఆర్యసమాజ్, దసరా ఉత్సవ కమిటీ బాధ్యులు డా.మురళీధరరావు, కేపీ రవికుమార్, ముత్యాల ప్రకాశ్, చంద్రయ్య, బి సుదర్శన్‌రెడ్డి తదితరులు పాల్గొన్నారు.

మాట్లాడుతున్న ఎమ్మెల్యే యెన్నం శ్రీనివాస్‌రెడ్డి. చిత్రంలో పుర అధ్యక్షుడు ఆనంద్‌కుమార్‌గౌడ్, తదితరులు

వేదాంత దర్శిని పుస్తకావిష్కరణ

మహబూబ్ నగర్ ప్రతినిధి మన ఉదయం సెప్టెంబర్ 15:

ఏపూరి కిష్టప్ప రచించిన "వేదాంత దర్శిని పుస్తకావిష్కరణ డా. మురళీధర్ రావు కృష్ణారెడ్డి, డా. భరద్వాజ్ చే గావించబడినది .మొదటిగా జ్యోతిప్రజ్వలనతో అశోక్ కుమార్ సాకర్ ఆధ్వర్యంలో మొదటగా యజ్ఞ కార్యక్రమం నిర్వహించారు. ప్రతిభా కీర్తి పురస్కార గ్రహీత, కవి, రచయిత దోరవేటి చెన్నయ్య మాట్లాడుతూ ముందుతరాల వాళ్ళకు జ్ఞానాన్ని అందించే విధంగా వేదాంత దర్శిని రచించబడిందని వివరించారు. ఉత్తమ ఉపాధ్యాయుడుగా ప్రభుత్వంచే గౌరవింపబడి విద్యార్థులను తీర్చిదిద్ది అక్కడితో తన బాధ్యత పూర్తయిందని అనుకుండా పదవీ విరమణ తర్వాత కూడా తన రచనల ద్వారా ఏపూరి కిష్టప్పగారు ప్రజలలో చైతన్యం కలిగిస్తున్నారని శతావధాని ములుగు అంజయ్య తెలియచేసారు. ఈ కార్యక్రమములో ఆర్యసమాజ గౌరవ అధ్యక్షులు డా.. వి మురళీధర్రావు, ఆర్యసమాజ అధ్యక్షులు డా. భరద్వాజ్ నారాయణరావు, నాయిని బాగాన్న గౌడ్, దోరవేటి చెన్నెయ్య, శ్రీములుగ అంజయ్య మరికొందరు ప్రముఖులు, దయానంద విద్యామందిర్ ఆచార్య ఆచార్యులు , దయానంద విద్యామందిర్ ప్రధానాచార్యులు నరసింహారెడ్డిగారి ఆధ్వర్యంలో జరిగినది..

पंडित नरेन्द्र भवन में १७ सितम्बर को

हैदराबाद मुक्ति दिवस मनाया गया

इस अवसर पर मुक्ति संग्राम में सब कुछ अर्पित करने वाले महानुभावों के परिवार वालों का सम्मान किया गया

श्री देवेन्दर रेड्डी जी समारोह के मुख्य अतिथि रहे

समारोह में स्व. श्री विश्नाथ जी के सुपुत्र श्री वैद्यनाथ जी याकुतपुरा का, स्व. श्री बालरेड्डी जी के पौत्र श्री देवेन्दर रेड्डी जी का तथा आर्य समाज जंगम्मेट के पं.त्रिलोकनाथ जी के पुत्र का सम्मान किया गया । चित्र में सम्मानित होते हुए श्री वैद्यनाथ जी को देखा जा सकता है ।

విమోచన దినోత్సవాన్ని అధికారికంగా నిర్వహించాలి

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ప్రధాన్ విఠల్‌రావు ఆర్య

కాచిగూడ: హైదరాబాద్ సంస్థాన విమోచన దినోత్సవాన్ని తెలంగాణ ప్రభుత్వం అధికారికంగా నిర్వహించినప్పుడే నిజమైన స్వాతంత్ర్యం వచ్చినట్లని ఆర్య ప్రతినిధి సభ ప్రధాన్ విఠల్‌రావు ఆర్య అన్నారు. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్-తెలంగాణ ఆధ్వర్యంలో ఆదివారం కాచిగూడలోని పండిత్ నరేంద్రభవన్‌లో హైదరాబాద్ విమోచన దినోత్సవ కార్యక్రమాన్ని నిర్వహించారు. ఈ సందర్భంగా స్వాతంత్ర్య సమరయోధులను ఘనంగా సత్కరించి అభినందించారు. హైదరాబాద్ విమోచన ఉద్యమానికి సంబంధించి భారత ప్రభుత్వం జరిపిన ఆపరేషన్ పోలో, ఉద్యమ పోరాటాన్ని పలువురు వక్తలు వివరించారు. విమోచన దినోత్సవాన్ని ప్రభుత్వం అధికారికంగా నిర్వహించకపోవడం సిగ్గుచేటని అన్నారు. నిజాం నిరంకుశ పాలనకు ఎదురొడ్డి

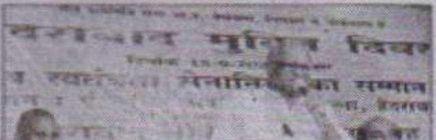

హైదరాబాద్ విమోచన దినోత్సవ కార్యక్రమంలో మాట్లాడుతున్న విఠల్‌రావు ఆర్య

ప్రాణాలు అర్పించిన అమరవీరుల త్యాగఫలమే తెలంగాణకు స్వాతంత్ర్యం వచ్చిందన్నారు.

సర్దార్ పటేల్ చొరవతో స్వేచ్ఛా వాయువులు పీల్చాం..

కోట్లాది మంది భారతీయులు నిరంతర పోరాటం,అసమాన త్యాగాల ఫలితంగానే స్వాతంత్ర్యం లభించిందని పేర్కొన్నారు. ఆ సమయంలో తెలంగాణ ప్రజలు తమవంతు పాత్ర పోషించారని గుర్తు చేశారు. ఆదే సమయంలో నిజాం నిరంకుశ పాలనలో మగ్గిపోతున్న రాజ్యంలో హత్యలు, అత్యాచారాలు పెరిగిపోయాయని చెప్పారు. అప్పటి హోంమంత్రి సర్దార్ వల్లభాయ్ పటేల్ చొరవ చూపి భారత భద్రత బలగాలను హైదరాబాద్ సంస్థానానికి పంపి పోలీసు చర్యతో విముక్తి కల్పించారని గుర్తు చేశారు. సర్దార్ పటేల్ చొరవతోనే స్వేచ్ఛా వాయువులు పీల్చామని అన్నారు.

మహారాష్ట్ర, కర్ణాటకలో అధికారికంగా వేడుకలు

హైదరాబాద్ సంస్థానంలో ఉన్న కొన్ని ప్రాంతాలు మహారాష్ట్ర, కర్ణాటకలలో విలీనమయ్యాయని అన్నారు. కానీ అక్కడ అధికారికంగా వేడుకలను నిర్వహిస్తున్నారని గుర్తు చేశారు. కార్యక్రమంలో ఆల్వాల దేవేందర్ రెడ్డి, హరికిషన్ వేదాలంకార్, ఆచార్య విద్యానంద్, డాక్టర్ వసుధా శాస్త్రి, ఠాకూర్ లక్ష్మణ్ సింగ్ పాల్గొన్నారు.

श्रद्धाँजलि

आर्य समाज मदनूर जिला (कामारेड्डी)निज़ामाबाद के अध्यक्ष तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना ·हैदराबाद के प्रमुख अधिकारी

श्री रमेश तम्मेवार जी का निधन

आर्य समाज मदनूर जिला (कामारेड्डी) निज़ामाबाद के अध्यक्ष तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना हैदराबाद के प्रमुख अधिकारी **श्री रमेश तम्मेवार जी** का लम्बी बिमारी के बाद उनके स्वगृह मदनूर में दि. ५ सितम्बर २०२४ के दिन निधन हो गया। श्री तम्मेवार जी प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री नागनाथ तम्मेवार जी के सुपुत्र थे। आप गुरुकुल घटकेश्वर में अपना विद्याध्ययन कर अपने पैत्रिक व्यवसाय में लगे रहे। पूरी जिन्दगी भर आर्य समाज से कभी विमुख नहीं हुए। आप आर्य समाज के लिए सब कुछ त्यागने के लिए हमेशा तैय्यार रहते थे। किसी भी हालत में वह आर्य समाज के नुकसान को सहन नहीं करते थे। आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए अहर्निश लगे रहने वाले श्री रमेश तम्मेवार जी आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी व अन्तरंग सदस्य रहे। हमेशा आर्य समाज के लिए अपना समय निकाल ही लेते थे। श्री रमेश तम्मेवार जी प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं.प्रेमचन्द जी प्रेम के दामाद थे।

आपका निधन आर्य समाज व आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए अपूरणीय क्षति है। इस कमी को कभी पूरा नहीं किया जा सकता। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो.विट्ठल राव आर्य व प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री हरिकिशन वेदालंकार तथा डॉ.रवीन्द्र गोजे बिचकुन्दा और आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री वेंकट नरसय्या आदी ने उनकी अंतिम यात्रा ६ सितम्बर के दिन शामिल होकर श्री रमेश तम्मेवार जी को श्रद्धाँजलि अर्पित की। परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति व शान्ति प्रदान करे तथा परिवारजनों को धैर्य व साहस प्रदान करें। श्री रमेश तम्मेवार जी के सम्मान में शवयात्रा के समय सारा बाज़ार बन्द रखा गया। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से स्व. श्री तम्मेवार जी को विनम्र श्रद्धाँजलि।

PANDIT NARENDRA

Azadi Ka Amrit Mahotsav

Loha Purush of Hyderabad state

Pandit Narendra, tallest of Arya samaj leader who played pivotal role in Hyderabad liberation movement. He dedicated his life for cause of nation by accepting brahmacharya and sanyasa ashram.He fought against atrocities of Razakars & was arrested numerous times by Nizam sarkar. He was great orator and inspired many youth to dedicate life for the cause of country and society. His statue can be seen at Koti near Andhra Bank.

Pandit Narendarji

A REBEL TO THE CORE

Swami Ramananda Tirth

Pandit Narendarji's yeomen services to the Nation are innumerable. His life is sago of sacrifice and suffering. It was no easy job to take cudgels against the oppressive feudal regime of the Nizam. From his early days he was inspired by the urge to liberate oppressed and the suppressed people of the erstwhile Hyderabad state. As much he was the probably the first victim on whom the heavy hand of the Nizam's regime fell.

He is an ardent devotee of Arya Samaj. He has dedicated his whole life for the propagation of the ideals of Arya Samaj and spared no pains to further its cause. **He is gifted with a powerful oratory which can move the masses to the depths**. Thousands have admired him and are ready to pay homage to his manifold services. Pandit Narendarji has struck me most amongst the Arya Samaj leaders. I came into contact with him long-long ago. He is a rebel to the core and expresses his sentiments and thoughts without fear. Bold in spirit he instills the same into others. The Government of those days counted him as their opponent no.1. It is no exaggeration to say that he gave the masses of Hyderabad a feeling of self-respect and a will to preserve it at all costs. I still remember vividly **how he was spirited way one evening to Mannanur and detained there for more than a year or so.**

His advocacy of the undergo is proverbial. He is up against every form of inequality and injustice. Daridrinarayana is the object of his worship. He is a deeply religious soul, service to the suffering humanity is the form he has chosen to worship Almighty.

PANDIT NARENDERJI

-Kodati Narayana Rao, Freedom Fighter

I remember and heard about Sri Narenderji somewhere in 1935. He was not Pandit Narendraji yet. He left 'Raiyyat' the Nationalist Urdu weekly editer by Sri M. Narasinga Rao, just some time ago I joined it. Since then I am in regular touch with Pandit Narenderji and his devotion towards Arya Samaj. He was responsible to inspire the youth and bring them into the field of Arya Samaj. It is not the art of making speech of Mr. Narenderji or his oratory that attracted the young hearts but the emotion, sacrifice and the fearlessness of Sri Narenderji which inspired the youth

Though he joined the State Congress at a later stage. Yet his contribution to struggle launched by it was not small. He was the unquestionable leader of the youth in the city.

He was legislator for some time but could not continue for a long. Perhaps like most of us, he also felt that he was misfit to the changed circumstances.

However if the history of freedom struggle is written properly, Pandit Narenderji's name will occupy an important place in it.

LIFE OF DEDICATION AND SACRIFICE

-P.V. Narsimha Rao
Former Prime Minister of India

Pandit Narenderji was the product of the National Struggle. I remember vividly how we, as High School and College Students were swayed and roused to action by his impassioned orations in the late thirties and early forties. Since then, I had always considered Pandit Narenderji as one of the persons who inspired me and thousands like me. His life of dedication, sacrifice utter selflessness, simplicity and daredevil boldness will remain unparalleled for a long time to come and he would continue to be adored by thousands of youth. To all of us, he represented of the best in human character.

VETERAN CONGRESS LEADER

-P. Narsa Reddy

Sri Pandit Narenderji was a veteran Congress Leader of erstwhile Hyderabad State since my student days. He was our leader in the struggle for the formation of a responsible Government in the State. He had raised the banner of revolt against the despotic rule of the then Nizam of Hyderabad and fought for the merger of the State with the Indian Union. He was interned for 14 months in **Mannanoor** (Dist. Mahabubnagar) for taking up this cause. He was a close associate of the late Swami Ramananda Thirth. A powerful speaker and devoted worker, he was a source of inspiration to one and all. His sacrificing nature could be understood from the point that in spite of all this public work. He gave the Congress ticket in favour of Sri Gopal Rao Ekbote purely on the ground that the latter was an advocate and a good political worker and hence he would contribute to the assembly more than himself.

FRIEND OF THE POOR

- Dr. G.S. Melkote

Pandit Narendraji was a Byword in every household in the erstwhile Hyderabad State and the present Andhra State and was well known figure even outside Andhra. Small in stature wiry in limbs, calm and cool, but when roused as a giant in action emitting fire from his eyes and bold words from his mouth. His oratory kept the public spelt bound and he had known to act on what he spoke. He had roused the Youth of Hyderabad to action against all wrongs and had suffered immensely for the public cause. He was a friend of the needy and had silently given his all for them. No one would deny the fact that for his all round contribution in the social and political field in Hyderabad, the present Hyderabad could not have been what it is today.

PANDIT ERENDERJI

- Ibrahim Ali Anasari

Pandit Narenderji a veteran Congress Leader of erstwhile Hyderabad State was the backbone of the struggle for formation of responsible Government in the State. He fought relentlessly against the oppressive ruler the Ex-Nizam of Hyderabad and for the merger of the

State with the Indian Union. He was one of the top and acknowledged leaders of the state. His rich experience sterling character and above all, indomitable courage will be immense value for the country as a whole.

THE LITTLE SHER-E-HYDERABAD

By V.H. Desai

To write about a man who mesmerised the people of his time by his mass appeal and played a notable part in the Freedom Movement is rather an exciting task nay, an impossible assignment, if he has no enough material before him. I am thankful to the editor of the present souvenir for inviting me to write about that personality whose contribution to the Freedom Movement in the erstwhile Nizam's state was not only unique but unparalleled.

Pandit Narendraji was undoubtedly Sher-E-Hyderabad when the Freedom Movement in erstwhile Nizam's State was taking its roots, with the emergence of State Congress. Under the banner of Arya Samaj, this great "little, Lion" was in the forefront at a time when the then State Congress was banned even before it was born under the leadership of late Govind Rao Nanal in the thirties.

My first eye-witness of the performance of Pandit Narendra ji as an orator comparable to the late Bahadur Yar Jung was in the year 1946, when the Nightingale of India Sarojani Naidu presided over a public meeting at the Hashamat Gunj flanked on either side by Pandit Narendra ji and Bahadur Yar Jung. In her bid to promote Hindu-Muslim unity in the unpredictable State of H.E.H the Nizam. I was then a scribe, representing a local Daily, Commissioned to report the proceedings.

Panditji's Voice

I still remember when Sarojani Naidu spoke of the 'two lions' whose love and admiration for gracious lady was something between a Mother and her two sons, each following his own path. Then followed Bahadur Yar Jung. He, while paying rich tributes to the "Mother", stuck to his guns in calling the people of Hyderabad to accept the sovereignty of H.E.H. of Nizam even after India attained Independence.

The last to speak was Pandit Narendraji. When he stood before the mike, there was dead-silence and the people, as one man rose to their feet. When his oration touched their heart, the thunderous cry of "Pandit Narendraji Zindabad" still rings in my ear.

In Jail

However, my first acquaintance with Pandit Narendraji was in the European Ward of the Central Jail in Chanchalguda. With the arrest of the State Congress Leaders, the Nizam's Government was hunting for the man behind the big-headlines in the National Dailies, Published from the rest of the Country. The last battle of Indian Freedom Movement was being fought under the aegis of the Hyderabad State Congress, with Swami Ramanand Teerth at its helm.

Pandit Narendraji was one of the members of the state congress working committee who was put behind the bars. He was with Swami Ramanand Teerth signaled the banner of revolt on 7th August 1947 by hoisting the National Flag. A week hence, the rest of the country was preparing to celebrate its Independence Day 15th August 1947; but to the people of erstwhile Nizam's State, the Independence Day was still a far-fetched goal.

I was arrested on November 22, 1947 along with M. Narsing Rao Editor "Rayyat". After a few days in police lock up, I was taken to the European Ward in the Central Jail of Chanchalguda where the entire State Congress "Cabinet" was detained.

During the few days of my stay in Jail. my affection and regard for Panditji grew and we started coming closer to each other till I was transferred to the Gulbarga Jail after a four months detention. During this period, it was my proud privilege to organise a mini parliament; with a regular Ministry installed. At my suggestion, Pandit Narendraji agreed to become "Information Minister" .But this "Coalition Government" had its own set-back. when "Panditji tendered his resignation and I was "inducted" as "Information Minister" with his blessings, he became the leader of opposition.

Panditji always had been a source of inspiration to me. His child like attachment to me is still green in my memory. It was a day for our "send-off" to Gulbarga jail. we were nine detunes altogether. Who were ordered to be transferred to Gulbarga Jail at short notice.When Panditji heard this news, he was stunned. Before we could be ready a "gaurd of honour" was accorded so all of us and when Panditji embraced me, in an affectionate farewell tears started rolling down his cheeks, I too could not control. Then he started crying like a child. He confessed soon after that he never cried like before. Why was he so much attached to me, I still do not know and never asked him about the incident at any time after that.

After Police Action

After Police Action in September, 1948, we became really free; having won our freedom at long last. I was released nearly a week after 17th September 1948, the day of the surrender of the Nizam's Forces to the Indian Army when our "Special Train" bedecked with National Flags steamed into Hyderabad. Thousands of people waiting at the platform greeted us and the first person to greet me was Pandit Narendraji. That was Pandit Narendraji.

To me, Panditji Narendraji was not merely a leader of the masses but a leader who inspired his people. More than being a leader, he is humane to a fault. A great orator a successful politician after the dawn of Independence . A man of independent views, with strong likes and dislikes over men and matters, he never found himself lonely within the Congress hierarchy. But the people who knew him do admire his courage of conviction; and salute him for the yeoman services he had rendered for their emanicipation.

The people of erstwhile Hyderabad State shall never forget **the 'Little' Sher-e-Hyderabad** for all he did for them in their hours of trials and tribulations.

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् || ओ३म् || वैदिक धर्म की जय

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में आर्य समाज किशन गंज एवं नगरद्वय की आर्य समाजों के सौजन्य से आर्य समाज का ऐतिहासिक 85 वां

विजयदशमी शोभा यात्रा

अश्विन शु. दशमी शनिवार दिनांक 12 अक्तूबर 2024 को सायंकाल 4-00 बजे से

ఆర్య సమాజ సంస్థాపకులు
స్వామి దయానంద సరస్వతి గారు

श्री गडील आंजनेयुलु जी

प्रधान आर्य समाज कवाड़ीगुड़ा, हैदराबाद

रथारूढ़ होकर आर्य समाज किशनगंज से शोभा यात्रा का नेतृत्व करेंगे ।

मुख्य अतिथि : श्री प्रेमसिंह जी राठोड़

सभी धर्म प्रिय सज्जनों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर शोभा यात्रा को सफल बनाएं ।

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ ఆధ్వర్యమున ఆర్య సమాజము కిషన్‌గంజ్, హైదరాబాద్
మరియు జంటనగరాల ఆర్య సమాజముల సౌజన్యముతో చారిత్రక 85వ

విజయ దశమి ఊరేగింపు

శ్రీ గడీల ఆంజనేయులు గారు

గౌ॥ శ్రీ గడీల ఆంజనేయులు గారు

ప్రధాన్ ఆర్య సమాజము కవాడిగూడ, హైదరాబాద్
ఆర్య సమాజము కిషన్‌గంజ్ నుండి బయలుదేరు ఊరేగింపునకు రథారూఢులై నాయకత్వం వహిస్తారు.

ముఖ్య అతిథి : గౌ॥ ప్రేమ్ సింగ్ రాథోడ్ గారు

ధర్మాభిమానులంతా అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని ఊరేగింపును జయప్రదం చేయగలరని కోరుచున్నాము.

నిర్వాహకులు

దసరా జులూస్ సమితి **दशहरा जुलूस समिति**

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 03-10-2024 REGISTERED-REGD. No. D/RNP/HCD-783/2024-26 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor :Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone : 040-24753827, 24756983, Narendra Bhavan : 040-24760030.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు :: విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ

To
ी प्र न,
ल्ली ार्य
, ह ि
ि ली-९
sabha/yahoo.com

SHAHEED BHAGAT SINGH

at close range several times by Singh, the postmortem report showing eight bullet wounds. Another associate of Singh, Chandra Shekhar Azad, shot dead an Indian police head constable, Channan Singh, who attempted to give chase as Singh and Rajguru fled.

After having escaped, Bhagat Singh and his associates used pseudonyms to publicly announce avenging Lajpat Rai's death, putting up prepared posters that they had altered to show John Saunders as their intended target instead of James Scott. Singh was thereafter on the run for many months, and no convictions resulted at the time. Surfacing again in April 1929, he and another associate, Batukeshwar Dutt, set off two low-intensity homemade bombs among some unoccupied benches of the Central Legislative Assembly in Delhi. They showered leaflets from the gallery on the legislators below, shouted slogans, and allowed the authorities to arrest them. The arrest, and the resulting publicity, brought to light Singh's complicity in the John Saunders case. Awaiting trial, Singh gained public sympathy after he joined fellow defendant Jatin Das in a hunger strike, demanding better prison conditions for Indian prisoners, the strike ending in Das's death from starvation in September 1929.

Bhagat Singh was convicted of the murder of John Saunders and Channan Singh, and hanged in March 1931, aged 23. He became a popular folk hero after his death. Jawaharlal Nehru wrote about him: "Bhagat Singh did not become popular because of his act of terrorism but because he seemed to vindicate, for the moment, the honour of Lala Lajpat Rai, and through him of the nation. He became a symbol; the act was forgotten, the symbol remained, and within a few months each town and village of the Punjab, and to a lesser extent in the rest of northern India, resounded with his name."

In still later years, Singh, an atheist and socialist in adulthood, won admirers in India from among a political spectrum that included both communists and right-wing Hindu nationalists. Although many of Singh's associates, as well as many Indian anti-colonial revolutionaries, were also involved in daring acts and were either executed or died violent deaths, few came to be lionised in popular art and literature as did Singh, who is sometimes referred to as the Shaheed-e-Azam ("Great martyr" in Urdu and Punjabi).

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor :Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆం.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया । Narendra Bhavan
प्रबन्धक प्रकाशक : श्री हरिकिशन वेदालंकार, मन्त्री सभा आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095. Ph : 040-24760030.